www.thearyasamaj.org

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

दिसम्बर 2013 मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी का 78वां जन्मदिवस
हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

www.thearyasamaj.org

ओ३म् ओ३म्

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

स्वामी धर्ममुनि जी जन्मदिवस पर आहुतियां देते हुए

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

854

श्री राजेश राठी
सुपुत्र स्व. श्री टेकचन्द राठी
गुड़गांव

855

डॉ. कर्मवीर सिंह आर्य
सैक्टर-6, बहादुरगढ़
झज्जर, हरियाणा

856

श्री प्रणव आर्य
315/27, राजीव नगर
गुड़गांव

857

श्री ओम प्रकाश आर्य
सुपुत्र श्री बलदेव सहाय
सोहना, गुड़गांव

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

मार्गशीर्ष-पौष सम्वत् 2070 दिसम्बर 2013

सृष्टि सं. 1972949113 दयानन्दाब्द 190

वर्ष-12) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-12

(वर्ष 43 अंक 12)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

आचार्य राजहंस मैत्रेय

❖

सह सम्पादक

स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, डॉ. मुमुक्षु आर्य

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(8529075021)

❖

उपकार्यालय प्रबन्धक

ईशमुनि (9991251275, 9812640989)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

व्यवस्थापकः चन्द्रभान चौधरी

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com, rajhansmaitreya@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
विविध समाचार	4
वेद सन्देश	5
सम्पादकीय : प्रभु के द्वार लौटना अनिवार्य है।	6
विवेक ज्ञान से अविवेक नष्ट हो जाता है।	7
सत्य न्याय एवं वेद के आग्रही स्वामी दयानन्द सरस्वती	9
ब्रह्मविद्या का अधिकारी	12
सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र	13
स्ट्रोक जीती जा सकती है जंग	15
ओ३म्	16
78वें जन्मोत्सव पर स्वामी धर्ममुनि जी को बधाईयां ...	17
मुस्करा के जियो यह जीवन	21
वर्तमान परिपेक्ष में शिक्षा से ही देश की उन्नति संभव	24
ध्यान के लिए नियमित अभ्यास जरूरी:दुग्धाहारी	26
धर्म के अनेक रूप	26
हंसो और हंसाओ	27
भ्रष्टाचार की आग	27
शाल बांटे गए	27
एक बार फिर आना होगा....	28
धरती माँ	28
सत्यार्थ प्रकाश प्रश्नोत्तरी भूमिका के अनुसार प्रश्नोत्तर	29
भारतीय संस्कृति के विनाश का पहला और बड़ा.....	30
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

www.thearyasamaj.org

स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी का 78वां जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर, गुड़गांव के मुख्याधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी का 78वां जन्मदिवस बृहद्यज्ञ एवं भजन संध्या कार्यक्रम के साथ स्वामी दिव्यानन्द जी पतंञ्जलि योगधाम ज्वालापुर की अध्यक्षता में उत्साह एवं धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर श्रीमती विमल बुद्धिराजा धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्र कुमार बुद्धिराजा कीर्तिनगर ने अपने 63वें जन्म दिवस पर यजमान आसन को शुशोभित किया। यज्ञ का प्रारम्भ आचार्य राजहंस मैत्रेय जी द्वारा हुआ। इस अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द जी ने स्वामी धर्ममुनि जी एवम श्रीमती विमल बुद्धि राजा को सामूहिक रूप से सुदीर्घायु की कामना करते हुए आशीर्वाद दिलाया। श्रद्धालुओं ने जन्मदिवस की बधाईयां देते हुए पूज्य स्वामी जी का पुष्प मालाओं द्वारा जोरदार स्वागत किया।

भजन संध्या के कार्यक्रम में श्री लक्ष्मण प्रसाद जी, पं. जय भगवान जी, पं. श्री सन्दीप जी आर्य, श्री जय भगवान, पं. रमेश चन्द्र जी आर्य, श्रीमती दयावती जी आर्या, श्रीमती रामदुलारी बंसल तथा कन्यागुरुकुल लोवा कला की छात्राओं ने सुरीले भजनों द्वारा समा बांध दिया, स्वामी रामानन्द जी, आचार्य खुशी राम जी, महात्मा लाल दास जी, आर्य विद्वानों ने स्वामी धर्ममुनी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए सुदीर्घायु की कामना की तथा उनके द्वारा किये जा रहे लोक कल्याण की सराहनीय प्रशंसा की। इस अवसर पर कर्मवीर राठी पूर्व चेयरमैन, बहादुरगढ़, श्री सतीश जी छिक्कारा, जिला परिषद् चेयरमैन झज्जर, श्री रमेश राठी, समाज सेवी, श्री रवीन्द्र गुप्ता, श्री सत्यपाल जी वत्स, चौ. चन्द्रभानु जी, विकासपुरी, वानप्रस्थी ईश मुनि जी, श्री अशोक जी जून, श्री राज सिंह, श्री वीरेन्द्र जी दौलतावाद तथा अन्य क्षेत्रीय गणमान्य व्यक्तियों ने पधार कर स्वामी जी को जन्म दिवस की बधाइयां दी तथा स्वामी जी से आशीर्वाद प्राप्त किया। जन्म दिवस समारोह पर आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने सभी संन्यासियों विद्वानों, दानियों तथा सभी विभिन्न स्थानों से आये आगुन्तकों का हार्दिक धन्यवाद किया तथा समारोह की सफलता पर सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन श्री राजवीर जी आर्य ने बड़े ही वाक् चातुर्य और प्रेरणाप्रद उद्धरण देते हुए किया। शान्तिपाठ के बाद स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था आचार्य विक्रम देव शास्त्री, आचार्य रवि शास्त्री, पं. धर्म देवशास्त्री, ब्र. कर्ण तथा अन्य छात्रों द्वारा की गयी जिसमें सभी ने भरपूर प्रसाद ग्रहण किया।

हर्षोल्लास से मनाया गया आर्य समाज का वार्षिकोत्सव

रविवार को सेक्टर-6 के डी.ए.वी. स्कूल में आर्य समाज का 11वां वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में बच्चों ने रंगारंग प्रस्तुति के साथ ही आज के सांप्रदायिक माहौल का नाटक की शक्ल दी। प्रतिभावान बच्चों को समाज की ओर से पुरस्कृत किया गया।

मुख्यातिथि के रूप में जिला परिषद् के वाइस चेयरमैन राजेश जून उपस्थित हुए। समारोह की अध्यक्षता स्वामी रामानन्द ने की। संचालन राजेश राठी ने किया। शुरुआत में हवन-यज्ञ हुआ। इसमें सिद्दीपुर लोवा कलां गुम्कुल की आचार्या राजन मान, मूर्ति व छात्राओं ने भाग लिया। इस मौके पर आर्य समाज के प्रसिद्ध त्यागी, तपस्वी विद्वानों ने प्रवचन तथा भजनोपदेशकों का मनोहर कार्यक्रम पेश किया। आर्य समाज की ओर से मेधावी छात्रों को पुरस्कृत किया गया। मुख्यातिथि जून ने कहा कि इस प्रकार के कार्यकर्मो से विद्यार्थियों का आध्यात्मिक व नैतिक विकास होता है। समाज सुदृढ़ होकर उन्नति की ओर अग्रसर होता है। अतिथियों में जिला परिषद अध्यक्ष सतीश छिकारा, भाजपा नेता नरेश कौशिक, इनेलो नेता कर्मवीर राठी, डी.ए.वी. के वाइस चेयरमैन चंद्रमोहन खन्ना भी उपस्थित रहे। छात्रा आंचल कुलश्रेष्ठ ने ईश्वर भक्ति गीत प्रस्तुत कर सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में आर्य समाज सेक्टर-2, 6, 7 व प्रेम नगर के लोग पहुंचे। प्रधानाचार्य राजदीप कुलश्रेष्ठ ने अतिथियों का धन्यवाद किया। समारोह में स्वामी धर्ममुनि, श्री दुग्धाहारी ने सभी आश्रम वासियों एवं विद्यार्थियों सहित शिरकत की। रामबीर, आर्य, प्रोफेसर राम विचार, हरिओम दलाल, राजकुमार, ब्रह्मजीत आर्य, कर्नल राजेन्द्र सहरावत अर्चना आर्या, कौशल्या आर्या, लक्ष्मी आर्या, रामदुलारी बंसल उपस्थित रहे।

www.thearyasamaj.org

वेद सन्देश

दोनों हाथों से भर-भरकर दे

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

दिवो विष्ण उत वा पृथिव्याः,
महो विष्ण उरोरन्तरिक्षात्।
हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यैः,
आप्रयच्छ दक्षिणादोत सव्यात्॥

अथर्व 7.26.8

ऋषिः **मेधातिथिः**। देवता **विष्णुः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

शब्दार्थः (विष्णो) हे सर्वव्यापक परमात्मना! **(दिव)** द्युलोक से **(उतवा)** और **(पृथिव्याः)** पृथिवी-लोक से (तथा) **(विष्णों)** हे विश्वान्तर्यामिन्! यज्ञ के देव! **(महः)** महनीय **(उरोः)** विस्तीर्ण **(अन्तरिक्षात्)** अन्तरिक्ष लोक से **(बहुभिः)** बहुत-से **(वसव्यैः)** ऐश्वर्य-समूहों से **(हस्तौ)** दोनों को **(पृणस्व)** भर ले। **(दक्षिणात्)** दाहिने हाथ से **(आ प्रयच्छ)** दान दे **(उत)** और **(सव्यात्)** बाएँ से (भी) आ (प्रयच्छ) दान दें।

अर्थ- हे विष्णु! हे सर्वव्यापक! हे विश्वान्तर्यामिन्! हे विश्व-ब्रह्माण्ड के स्वामिन्! तुम अपूर्व धनाधीश हो। विश्व के द्युलोक, अन्तरिक्ष-लोक और पृथिवी-लोक में जो धन बिखरा पड़ा है, वह सब तुम्हारा ही है। अतः तुम धन-कुबेर हो। एक और तुम धनपति हो ओर हम अकिंचन हैं। अतः हम चाहते हैं कि तुम अपने कोष में से दाहिने-बाएँ दोनों हाथों से भर-भरकर हमें दान दो। तुम्हारे रचे पृथ्वी-लोक से सुवण, रजत, ताम्र अयस, हीरे, मोती आदि ऐश्वर्यों की निधियाँ भरी हुई हैं। वे ऐश्वर्य तुम हमें भी प्रदान करो। अल्प मात्रा में नहीं, प्रचुर मात्रा में प्रदान करो, क्योंकि हम ऐश्वर्यमय जीवन जीने की ही साध लिये हुए हैं।

पर हे विश्वव्यापी देव! हम केवल इन भौतिक ऐश्वर्यो का ही पाकर सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहते। हम शरीरस्थ द्यु-लोक, अन्तरिक्ष-लोक और पृथिवी-लोक के ऐश्वर्या को भी पाने के लिए आतुर हो रहे हैं। हमारा अन्नमय कोश ही पृथिवी-लोक है, जिसमें शरीर की त्वचा से लेकर अस्थि-पर्यन्त सब ढांचा आ जाता है। असका ऐश्वर्य है शारीरिक स्वास्थ्य और शारीरिक बल, जिसके बिना मनुष्य का जीवन-यापन, व्यान, उदान, समान, इन पांचो से तथा कर्मेन्द्रियों से मिलकर प्राणमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है प्रागण, अपानन आदि क्रियाओं का समुचित रूप से होते रहना तथा हस्त-पादादि कर्मेन्द्रियों को कार्य-क्षम बने रहना। मन और ज्ञानेन्द्रियों से मिलकर मनोमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है मन के माध्यम से ज्ञानेन्द्रियों का ज्ञान-प्राप्ति में सहायता होना तथा मन का सत्यसंकल्प करना। ज्ञानेन्द्रियों-सहित बुद्धि विज्ञानमयकोश कहलाता है। इसका ऐश्वर्य है ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान पर ऊहापोह करके निश्चयात्मक ज्ञान अर्जित करना। आनन्दमय कोश द्यु-लोक है, जहाँ हृदयपुरी में प्रतिष्ठित आत्मा के अन्दर ब्रह्म का वास है। इसका ऐश्वर्य है ब्रह्मानन्द की प्राप्ति। हे विष्णुदेव! तुम इन समस्त ऐश्वर्यो से भी भरपूर करने की कृपा करते रहो। हे जगत्पिता! तुम निरैश्वर्य की अवस्था से पार करके हमें अधिकाधिक ऐश्वर्य प्रदान कर कृतार्थ करते रहो।

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूरभाष : 01276-230195 **चलभाष** : 09416054195

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय प्रभु के द्वार लौटना अनिवार्य है।

आपने एक कहानी पढी होगी कि एक दुकानदार के पास एक ग्राहक जूते खरीदने आया। जूते पसन्द आने पर 250/ रुपये में ग्राहक जूता लेने को तैयार हो गया। ग्राहक ने जब पैसे निकाले तो उसकी जेब में 230/ रुपये थे, उन्हें देते हुए ग्राहक ने दुकान मालिक के कर्मचारी को कहा कि अभी मेरे पास 230/ रुपये हैं। 20/ रुपये बाद में दे जाऊंगा, कृपया उधार कर लें। कर्मचारी ने मालिक को बताते हुए कहा कि कोई बात नहीं है, ये सज्जन 20/ रुपये बाद में अवश्य दे जायेगें। मुझे पूरा विश्वास है। उसके बाद कर्मचारी ने जूते डिब्बे में बन्द कर के दे दिए। वह ग्राहक जूते लेकर चला गया। बाद में मालिक ने अपने नौकर से पूछा कि क्या तुम उस ग्राहक को जानते हो, क्या वह तुम्हारा मित्र था? नौकर ने कहा कि मैने तो उसे पहली बार देखा है और वह मेरा मित्र भी नहीं है फिर मालिक ने कहा कि तुमने कैसे विश्वास कर लिया कि वह 20/ रुपये अवश्य दे जायेगा। तुम ऐसा किसके आधार पर कहते हो? नौकर ने कहा कि तुम चिन्ता मत करो, वह अवश्य ही लौटकर आयेगा और 20/ रुपये दे जायेगा। मैंने डिब्बे में एक ही पैर के दो जूते रख दिये हैं वह घर जाकर खोलेगा तो देखते ही शेष पैसे और जूते लेकर वापिस भागा आयेगा। इसका मुझे पूरा विश्वास है।

ईश्वर ने भी संसार की व्यवस्था को कुछ ऐसे ही बनाया है कि उसने भी जन्म देते समय सुख के साथ दुख रूपी एक जूता ऐसा रख दिया है जो मनुष्य को अन्ततः विवश होकर उसकी ओर लौटना ही पड़ता है। वह दुख रूपी जूता संसार में मनुष्य को टिकने ही नहीं देता। मनुष्य कितना ही संसार में सुख, वैभव और सम्पन्नता से परिपूर्ण क्यों न हो जाये। परन्तु उसे दुख का कांटा चुभता ही रहता है और अन्ततः उसे दुखी होकर परमात्मा के पास लौटना ही पड़ता है। इस जगत में व्यक्ति के पास सब कुछ होकर भी निराशा और हताशा ही हाथ लगती है और अंततः उसे यह जन्म जन्मान्तर के बाद स्वीकार करना ही पड़ता है कि संसार नश्वर है। यहां स्थायी रूप से नहीं रहा जा सकता। अब तो आत्मा परमात्मा को जानना ही पड़ेगा। अन्यथा संसार में सब कुछ भयावह है। यह देखकर ही वह आध्यात्मिक होने के लिए अग्रसर हो पाता है।

संसार बहुत सौन्दर्यपूर्ण है परन्तु इसके सौन्दर्य को हम देख नहीं पाते वह भी इसलिए कि हमें अभी देखने की, दर्शन की क्षमता विकसित नहीं हुई और वह तब तक विकसित नहीं होगी जब तक संसार में सुख के साथ भयानक रूप से वह कांटा चुभता न रहे। यह साफ देखा जाता है कि जब भी हम सुख पूर्ण होने के लिए तैयार होते हैं तभी अचानक दुख रूपी कांटा ऐसा चुभ जाता है कि उसे ही दूर करने का प्रयास करते रहते हैं और वह दूर भी नहीं हो पाता कि अचानक फिर चुभ जाता है इस प्रकार सम्पूर्ण जीवन संघर्ष में निकल जाता है। इसलिए कहा जा सकता है कि मानव कष्ट भोग भोग कर चिन्तनशील होता हुआ ही विवेक पूर्ण होता है। मानव जो दुख है उसे ही हटाने का प्रयास करता रहता है। उसका पूरा जीवन दुखों को दूर करने के संताप में ही व्यतीत हो जाता है। इसलिए हमें अपनी दृष्टि पारदर्शी बनानी पड़ेगी जो सुख और दुख के पार उस परम को अनुभव कर सकें। वह परमात्मा इस जगत के पार है और वहीं जानने योग्य है अन्य सब कुछ तो उस तक पहुंचने की घूम फिर कर प्राथमिक सीढियां हैं। वहीं पहुंचने पर जीवात्मा की सब चिन्ताएं और सब निराशाऐं दूर हो जाती हैं। हर जीवात्मा को घूम फिर कर उस परम पद को पाना ही होंगा। भारतीय ज्ञान परम्परा उस परमपद का साक्षात्कार करती रही है और शास्त्र उस अनुभूति के संकेत हैं। भारतीय सम्पूर्ण मनीषा उसको सर्वात्मना समर्पित रही है। और पूरे विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि इस भौतिक जगत के पार उस परम रहस्य को भारतीय योगियों, ऋषियों, और सन्तों ने जाना है। भले ही उन्होंने कोई वैज्ञानिक सबूत इकटठे न किये हों परन्तु प्रत्यक्ष अनुभव कर उसे विभिन्न ढंगों से कहा है स्वयं वेद तथा अन्य शास्त्र उसकी महिमा के गीत गाते हैं।

-राजहंस मैत्रेय

www.thearyasamaj.org

विवेक ज्ञान से अविवेक नष्ट हो जाता है।

- राजहंस मैत्रेय जी, आचार्य आत्मशुद्धि आश्रम

पिछले अंक में जीवात्मा को मध्यम परिमाण वाला मानकर गति के कारण उसका बद्ध होना स्वीकार नहीं। इस विषय पर लिखा गया अब शंका होती है कि यदि आत्मा निष्क्रिय है जो गतिशील वाले शास्त्रीय प्रमाण कैसे ठीक हो सकता है इसका ही उत्तर इस सूत्र द्वारा दिया जाता है।

गतिश्रुतिरप्युपाधियोगादाकाशवत् ॥ 51॥

पदार्थ-आकाशवत्=जैसे घड़े की उपाधियोग से आकाश में आना जाना सम्भव होता है **अपि**=वैसे ही **उपाधियोगात्**=बुद्धिरूप उपाधिके योग से आना जाना संम्भव होता है उसी का गति **श्रुतिः**=आने जाने के शास्त्र श्रुतिप्रतिपादन करते हैं।

जीवात्मा को सत् चित् और अणुपरिमाण वाला कूटस्थ स्वीकार किया गया है वह नित्य है वह क्रिया रूप होने से विकारी नहीं होता और उसकी गति जो आने जाने की कही जाती है वह उपाधि रूप से कही जाती है जैसे घडे की गति से आकाश की गति और घड़े की स्थिरता से आकाश की स्थिरता या बस की गति से ड्राईवर की गति समझी जाती है और बस की स्थिरता से ड्राईवर की स्थिरता समझी जाती है वैसे ही आत्मा में गति का आरोपण कर लिया जाता है इस प्रकार बुद्धियोग से आत्मा का गमन आगमन लोक परलोक में समझा जाता है उसी का गति प्रतिपादक श्रुति प्रतिपादन करती है और दूसरे का नहीं।

गति आत्मा का बन्ध का कारण नही तो क्या कर्म से उत्पन्न धर्म अधर्म अथवा अदृष्ट को आत्मा के बन्ध का कारण मान लेना चाहिए अगले सूत्र में इसे कहा गया है-

अतिप्रसक्तिरन्यधर्मत्वे॥ 52 ॥

पदार्थ-अन्यधर्मत्वे=आत्मा के बन्ध में यदि दूसरे के धर्म को कारण माना जाये तो **अतिप्रसक्तिः**=अति प्रसक्ति दोष होगा अर्थात् जो बन्ध में न आने चाहिए उनका भी बन्ध में आना होगा मुक्त आत्माएं भी बन्ध में आ जायेगी जो सम्भव नहीं हैं। अतः आत्मा के बन्ध में अदृष्ट भी कारण नहीं।

अब प्रश्न होता है कि यदि अदृष्ट को आत्म-धर्म मान लिया जाये तो आत्म बन्ध का कारण अदृष्ट हो सकता है और समस्या का हल हो जायेगा इस शंका का समाधान किया जाता है-

निर्गुणादिश्रुतिविरोधश्चेति॥ 53॥

पदार्थ-च=अदृष्ट को आत्म-धर्म मानने पर **निर्गुणादिश्रुतिविरोधः**=निर्गुणता को कहने वाली श्रुति का विरोध हो जाता है **इति**=इसलिए अदृष्ट को आत्म-धर्म नही माना जा सकता।

बृहदारण्यकोपनिषद में कहा गया है कि **असंगः हि अयं पुरुष इति** 4/3/1-16 अर्थात् यह पुरुष विकारी गुणो से रहित है इस प्रकार अदृष्ट का आत्म-धर्म मानने पर विरोध आता है इसलिए अदृष्ट का आत्मा का धर्म नहीं माना जा सकता।

19वें सूत्र से लेकर 54वें सूत्र तक दर्शनो के विद्वान् आचार्य उदयवीर जी शास्त्री ने इन्हें प्रक्षिप्त स्वीकार किया है और अपने चिन्तन और शास्त्रीय प्रमाणों के आधार पर सांख्यचिन्तन से बहिर् मानकर उन्हें सूत्रक्रम से अलग कर दिया है। हमने क्रमानुसार सूत्रों को चालू रखा है।

19वें सूत्र में प्रकृतियोग को आत्म-बन्ध का कारण माना गया था जो नहीं हो सका क्योंकि वह बद्ध मुक्त दोनो में समान हो जाता है अब इसका समाधान किया जाता है-

तदयोगोऽप्यविवेकान्नसमान्त्वम् ॥ 55 ॥

पदार्थ-तद्योग=प्रकृति के योग से आत्मा का जो बन्ध स्वीकार किया है वह बन्ध **अपि**=भी अविवेक=अविवेक से होता है। **समानत्वम्**=पूर्व कहे गये आत्म बन्ध के कारणों के साथ **न**=नहीं अर्थात् पृथिवी के संयोग से जो आत्मा का बन्ध स्वीकार किया जाता है वह भी आत्म अविवेक से होता है आत्म बन्ध के जो पहले कारण बताये हैं। उनके साथ इनकी समानता नहीं हो सकती।

आचार्य ने पहले आत्मबन्ध के विभिन्न कारण प्रस्तुत करके उनका अयुक्त माना अब प्रकृति-संयोग से आत्म बन्ध स्वीकार करते हैं परन्तु वह भी आत्मा के

www.thearyasamaj.org

अविवेक के कारण प्रकृति के सम्पर्क में आता है। इसकी बद्ध और मुक्त के साथ समानता नहीं क्योंकि मुक्त आत्माओं ने विवेक से अविवेक का नाश कर लिया है और अविवेक के नाश हो जाने पर प्रकृति संयोग विद्यमान होने पर भी वह उनका बन्ध का कारण नही बनता। यहां भी लोक में देखने को मिलता है कि अविवेक पूर्ण सम्बन्ध ही किसी भी विषय के साथ दुख का कारण होता है, इसलिए कहा जा सकता है कि अविवेक ही बन्ध का कारण बनता है। केवल प्रकृति संयोग नहीं।

अब प्रश्न होता है कि अविवेक ही आत्मा और प्रकृति के संयोग में बन्ध का मुख्य कारण है तो फिर इससे किस प्रकार छूटा जा सकता है। इसका उत्तर दिया जाता है-

नियतकारणात्तदुच्छितिर्ध्वान्तवत् ॥ 56 ॥

पदार्थ-नियतकारणात्=निश्चित कारण से **तदुच्छित्तिः**=उसका नाश हो जाता है। **ध्वान्तवत्**=अन्धकार के समान अर्थात् विवेक ज्ञान से उस अविवेक का नाश हो जाता है। जैसे प्रकाश से अन्धकार दूर हो जाता है।

संसार में देखा जाता है कि विवेक ज्ञान से भ्रम दूर हो जाता है जैसे रस्सी में सर्प का भ्रम हो जाता है तो प्रकाश में पुनः देखने पर भ्रम दूर हो जाता है। जैसे प्रकाश से अन्धकार दूर हो जाता है वैसे ही विवेक ज्ञान से अविवेक का नाश हो जाता है और भ्रान्ति का जो निश्चित कारण है उसके सम्यक् ज्ञान से भ्रान्ति दूर हो जाती है। आत्मा और प्रकृति के संयोग में अविवेक बन्ध का कारण है। योगाभ्यास द्वारा विवेक ज्ञान से पुरुष प्रकृति का विवेक होकर बद्ध आत्मा मुक्त हो जाती है।

प्रश्न होता है कि प्रकृति और आत्मा के विवेक से अविवेक के नाश हो जाने पर भी क्या मुक्ति संम्भव है? उस अवस्था में दूसरे अविवेक भी उपस्थित रहते हैं। इसका समाधान किया जाता है-

प्रधानाविवेकादन्याविवेकस्यतद्धाने हानम् ॥ 57 ॥

पदार्थ-प्रधान अविवेकात्= प्रकृति के अविवेक से **अन्य अविवेकस्य**=दूसरे अविवेक होते हैं। **तत् हाने**=उनके नाश में **हानम्**=दूसरे अविवेकों का नाश हो जाता है अर्थात् प्रकृति के अविवेक से दूसरे अविवेक होते हैं। उनके नाश होने पर दूसरे अविवेक भी नष्ट हो जाते हैं।

यह देखा जाता है कि कारण के नाश से कार्य का नाश हो जाता है लोक में अविवेक के कारण ही आत्मा और प्रकृति का संयोग है फिर तो कामनाएं, शरीर, पुत्र, पौत्र आदि अन्य विस्तार हो जाता है। विवेक ज्ञान हो जाने से प्रकृति पुरुष का संबन्ध का नाश और उसके नाश से संसार के सभी सम्बन्धों का नाश हो जाता है इसलिए प्रकृति पुरुष के विवेक से दूसरे सब अविवेक भी नष्ट हो जाते हैं।

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2000/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

www.thearyasamaj.org

सत्य न्याय एवं वेद के आग्रही स्वामी दयानन्द सरस्वती

प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

स्वामी दयानन्द का जन्म सौराष्ट्र (गुजरात) टंकारा, मौरवी में हुआ था। इनके पिताजी कर्षणजी तिवारी औदीच्य कुल के सामवेदी ब्राह्मण थे। वे निष्ठावान शिव भगवान के भक्त थे। उन्होंने अपने पुत्र का नाम 'मूलशंकर' रखा था। सो स्वामी दयानन्द का जन्म से नाम मूलशंकर था। सामवेदी ब्राह्मण होने पर भी पिताजी ने मूलशंकर को यजुर्वेद की रूद्राष्टाध्यायी कंठस्थ करा दी थी। कर्षण जी अपने पुत्र मूलशंकर को भगवान शिव जी की कहानियाँ बड़ी निष्ठा से सुनाया करते थे। पिताजी के आग्रह पर मूलशंकर ने 14 वर्ष की आयु में पूर्ण श्रद्धा भक्ति के साथ शिवरात्रि का व्रत किया। दिनभर भगवान शिव की कथा वार्ता होती रही और मूलशंकर ने दृढ़ता से उपवास किया था। सायंकाल पिताजी मूलशंकर को साथ ले, शिव के पूजन की साम्रगी लेकर गाँव के बाहर मंदिर में शिवरात्रि का पूजन करने के लिए गए। मूलशंकर के पिताजी बड़े धनाढ्य संपन्न ब्राह्मण थे। शिवरात्रि में शिव की पिंडी का पूजन बड़े ठाठ-बाट, घटाटोप से हुआ। दूसरे पहर का पूजन भी हो गया। तीसरे प्रहर में निद्रा देवी ने सबको दबा दिया। मूलशंकर के पिताजी और मन्दिर के पुजारी जी, सभी निद्रा के वश में हो गए, सिर्फ मूलशंकर पूरी श्रद्धा भक्ति से जागते रहे। मंदिर में पूर्ण नीरवता, शांति छाई हुई थी। इतने में मंदिर के इधर उधर से दो चार चूहे पिंडी पर उछल कूद करने लगे। मूलशंकर के हृदय में प्रभु-कृपा से सत्य का प्रकाश हुआ। उन्हें दृढ़ विश्वास हो गया कि यह पिण्डी कल्याणकारी भगवान शिव, कैलाशवासी, तांडवकारी भगवान् शंकर नहीं हो सकती। यह सत्य के प्रति प्रथम आग्रह था। उन्होंने पिताजी को जगाया किन्तु पिताजी और पुजारी मूलशंकर को संतुष्ट नहीं कर सके और सत्य के प्रति आग्रही मूलशंकर घर आ गए। सत्य के प्रति यह परम दुर्दान्त आग्रह स्वामी दयानन्द में संपूर्ण जीवन में बड़ी दृढ़ता से बना रहा और स्वामी दयानन्द ने यावत् जीवन सत्य का प्रचार किया और किन्हीं भी परिस्थितियों में सत्य के साथ कोई समझौता नहीं किया।

स्वामी दयानन्द ने अपने युगान्तरकारी कालजयी ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' की भूमिका में लिखा है ''मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य पर झुका जाता है ''स्वामी जी ने वहीं भूमिका में पुनः लिखा है-'विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर देना, पश्चात् मनुष्य स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मित्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहे।'' वहीं पुनः लिखते हैं: ''यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़कर सर्वतंत्र सिद्धांत अर्थात् जो-जो बातें अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक-दूसरे के विरूद्ध बातें हैं, उनका त्यागकर परस्पर प्रीति से वर्ते वर्तावें, जो जगत का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध में अविद्धानों में विरोध बढ़कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है।'' यह उद्धरण किसी समीक्षा या व्याख्या की आकांक्षा नहीं करते।

स्वामी दयानन्द सत्य के प्रति इतने आग्रहवान थे

आनन्दपूर्ण जीवन हेतु

दुःख, अशान्ति, तनाव, वैमनस्य आदि भावों को रूपान्तरित कर सुख शांति, प्रेम करूणा एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण, मानसिक दुर्भावनाओं से निर्जरा स्वयं के व्यक्तित्व का सम्यक् विकास और जीवन को आह्लादपूर्ण बनाने वाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा लाभान्वित होने के लिए आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ जिला झज्जर, हरियाणा में आप सादर आमन्त्रित हैं।

–राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

www.thearyasamaj.org

कि उन्होंने आर्य समाज का चौथा नियम यह बनाया कि ''सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।'' स्वामी जी ने पुनः पाँचवे नियम में यह व्यवस्था दी है कि ''सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य के विचार करके करने चाहिए।''

सत्य और न्याय एक-दूसरे के साथी हैं। जहाँ सत्य का पालन होगा वहाँ न्याय स्वतः होता रहेगा। जिस युग में स्वामी जी ने अपना प्रचार कार्य आरम्भ किया। उस समय कई प्रकार के अन्याय समाज में परिवारों में प्रचलित हो गए थे। सामाजिक रूप में छुआ-छूत भयानक रूप से चल रहा था। अछूतों को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। परिवारो में स्त्रियां की स्थिति बहुत दयनीय हो गयी थी। उनके साथ प्रायः दासियों जैसा व्यवहार होता था। स्त्रियाँ सब प्रकार से तिरस्कृत और पैर की जूतियाँ समझी जाती थी। स्त्री और शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं था। स्वामी दयानन्द ने बड़े क्षोभ और उग्रता से इस अन्याय का विरोध किया। लड़कियों के लिए पाठशाला की व्यवस्था की और अछूतों के लिए छूआ-छूत के भेद भाव दूर कर दिए और उनके लिए भी पढ़ने की व्यवस्था की।

उस युग में बाल-विवाह बहुत प्रचलित था। आठ-दस वर्ष की लड़कियाँ भी बूढ़ों और अधेड़ों को ब्याह दी जाती थी। विधवाओं की संख्या बहुत अधिक थी और विधवा-विवाह धर्म-विरूद्ध माना जाता था। ये बाल-विधवाएँ या तो वेश्या बन जाती थीं या देवदासियाँ बन जाती थी। स्वामी दयानन्द ने इन सभी अन्यायों का डटकर विरोध किया। आर्य समाज ने अपने मंदिरों से छुआ-छूत को हटाया और बाल-विवाह के विरूद्ध सामाजिक आन्दोलन किया। हिन्दू समाज में विधवा विवाह आरम्भ हो गया। प्रत्येक आर्य समाज मंदिर में कन्याओं को पढ़ाने के लिए पाठशालाएं खुल गयी। अछूतों को आर्यसमाज के विद्यालयों और छात्रावासों में बिना किसी रोक-टोक के प्रवेश मिलने लगा। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को सामाजिक बहिष्कार का दण्ड भी भोगना पड़ा किन्तु स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं के फलस्वरूप ये सामाजिक आन्दोलन बढ़ता ही गया और छुआ-छूत मिटने लगा तथा स्त्रियों को भी पुरुषों की तरह सामाजिक अधिकार मिलने लगा। उन्हें सब प्रकार से उन्नति का अवसर सुलभ हो गया।

संस्कृत और हिंदी की शिक्षा की बड़ी उपेक्षा हो रही थी। संपन्न लोग उर्दू और फारसी पढ़ रहे थे। स्वामी दयानन्द ने अपने संगठन में सारे कामों को हिन्दी में करने का अनिवार्य नियम बना दिया।

स्वामी दयानन्द के इस प्रचार का परिणाम यह हुआ कि अछूत कुलों के विद्यार्थी भी बड़े-बड़े विद्वान, आचार्य, वेदपाठी, अध्यापक बनने लगे और बिना किसी भेद-भाव के पण्डितों की मण्डली में प्रतिष्ठित होने लगे। स्त्रियां भी संस्कृत और वेद की उच्चकोटि की विदुषी बनने लगी औरपुरुषों के समान ही वेदों की पण्डिता भी होने लगी। इधर छुआ-छूत को दूर करने का प्रयास महात्मा गाँधी ने भी किया और राष्ट्र की आत्मघाटी छुआ-छूत की प्रथा समाप्त होने लगी। छूत-छूत की प्रथा समाप्त होने लगी। छूत-अछूत, सर्वण-असवर्ण, सब बिना किसी भेदभाव के चाय, नमकीन, समोसे, मिठाई आदि खाने पीने लगे। इस बीच मण्डल, कमण्डल, सच्चर आदि कमीशनों, कमेंटियों की रिपोटों ने जातिगत भावना को भड़का दिया। राष्ट्र की एकता की इस आत्मघाती नीति को राजनीतिक दलों ने भी अपने निहित राजनीतिक स्वार्थों के कारण खूब बढ़ावा दिया। अब तो ऐसा लगने लगा है कि अछूत जनजाति, अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग, सभी को राष्ट्र की एकता के विभाजन का राष्ट्रघाती पुरस्कार मिलने लगा है और स्वार्थी राजनीति इन्हें चिरस्थायी करने पर तुली हुई है। स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी की राष्ट्र-हितैषी छुआ-छूत को दूर करने की नीति को ही राजनीति ने निर्ममता से समाप्त कर दिया है।

वेदों को अपनाने का सिद्धांतः स्वामी दयानन्द का सुविचारित निश्चय ध्था कि जब तक भारतवर्ष ने वेदों की शिक्षा को अपने राष्ट्रीय जीवन में अपना रखा था तब तक देश की सर्वागीण उन्नति हुई और देश संसार के सभी देशों का शिरोमणि बना रहा। स्वामी जी ने आर्य समाज का तीसरा नियम ही बना दिया। ''वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म हैं।'' वेदों को अपनाने के अनेकों कारण थे। वेद पुरुषार्थ और कर्मण्यता का उपदेश देते हैं, भाग्य,

www.thearyasamaj.org

नियति का विरोध करते हैं-''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजिविषेत्''-यावत् जीवन कर्म करते हुए जीने की इच्छा करो। परमेश्वर ने मानव योनि को उन्नति करने तथा दक्षता प्राप्त करने के लिए बनाया है-''उद्यानम् ते नावयानं, जीवातुं ते दक्षतातुं कृणोमि''-वेद कर्म न करने वालों को कामचोर, 'दस्यु' कहता है, ऐसे परजीवियों, पैरासाइटों को दण्ड देने का आदेश देता है। अकर्मा दस्युः बधीः दस्यु'' परमेश्वर ने मनुष्य को उचित, अनुचित परखने की शक्ति दी है वेद कहते हैं-अश्रद्धाँ अनृते दधात्, श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः''। वेदों में पाप क्षमा का सिद्धांत नहीं है। पाप या पुण्य, सबका फल मनुष्य को भोगना पड़ता है-''अवश्यमेव भोक्तव्यम कृतं कर्म शुभाशुभ''। वेदों में सांसारिक और पारमार्थिक उन्नति का परिपूर्ण उपदेश हुआ है। वेद में कृषि, वाणिज्य, उद्योग, सबकी शिक्षा है। वेद में सब विद्याओं का मूल पाया जाता है। वेदों में पृथ्वी से लेकर अंतरिक्ष और द्युलोक पर्यन्त सब ज्ञान का परिपूर्ण वर्णन है। वेद में स्वराज्य की बड़ी महिमा है। अनेक मन्त्रों में ''अर्चननु स्वराज्यम'' का सम्पुट हुआ है। वेद में प्रखर राष्ट्रवाद की महिमा का वर्णन है। प्रार्थना है कि हमारे राष्ट्र में सब प्रकार के विद्वान, योद्धा, विदुषी स्त्रियाँ और बलवान गाय, घोड़े, पशु आदि हों। वेद में मातृभूमि की बड़ी उत्कृष्ट भावना विद्यमान है। अथर्ववेद में भूमिसूक्त में कहा गया है-''माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः'8। मातृभूमि की यह प्राचीनतम प्रतिष्ठा है। वेद में विश्व-सरकार ओर विश्व- नागरिक का भी वर्णन है। वेद में विश्वनागरिक को 'विश्वमानुष'' कहा गया है। यह संयुक्त राष्ट्रसंघ से भी अधिक उत्कृष्ट वेदों में पाई जाती है।

स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए भी सत्य, न्याय और वेद का प्रचार किया। मानव जाति के कल्याण में ही उन्होंने अपना जीवन समाप्त कर दिया। सत्य की रक्षा के लिए ही उन्हें धोखे से विषपान कराया गया और 1963 ई. में दिवाली की संध्या को उनका देहांत हो गया। ऐसे महात्मा का पुण्य स्मरण भी सौभाग्य है।

पी-30, कालिन्दी हाउसिंग स्कीम, कोलकाता

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	23.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	28.00	रु. प्रति किलो
विशेष	45.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	65.00	रु. प्रति किलो
सुपर डीलक्स	120.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

www.thearyasamaj.org

ब्रह्मविद्या का अधिकारी

- महात्मा ओममुनि

उपनिषद् काल का एक प्रसंग है। एक बार छः जिज्ञासु ब्रह्मचारी किसी ब्रह्मज्ञानी गुरु की तलाश में थे। खोज करते-करते हुए उन्हें ज्ञात हुआ कि उनकी ब्रह्मज्ञान की जिज्ञासा का समाधान महर्षि पिपलाद कर सकते हैं। सभी छः जिज्ञासु हाथ में समिधा लेकर महर्षि पिप्लाद के पास पहुँचे। तब महर्षि पिप्लाद ने उनसे कहा कि-'भूयः एव तपसा, ब्रह्मचर्येण श्रद्धसर संवत्सर-संवत्स्ययं', यद्यपि आप लोग तपस्या करके, ब्रह्मचर्य का जीवन बिता कर तथा श्रद्धा-पूर्वक यहाँ आए हो, तो भी आप लोग मेरे आश्रम में एक वर्ष तक मेरे समीप साधना पूर्वक निवास करो। एक वर्ष के पश्चात् जैसा आप उचित समझें प्रश्न पूछ सकते हैं। अगर उन प्रश्नों का उत्तर या समाधान मैं जानता होऊंगा तो आपको अवश्य बतला दूंगा।

ऋषि पिपलाद ने उन छः जिज्ञासुओं के तीन गुणों, 'तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा' की बात कही। उन्हें अपने पास एक वर्ष तक रखकर उनके धैर्य, संयम के साथ वे ये भी देखना चाहते थे कि क्या उनके जीवन में-'तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा' इन तीन गुणों का समावेश है या नहीं और तभी वे उन्हें ब्रह्मज्ञान देने को तैयार हुए।

आईए अब थोड़ा यह भी जानले कि ऋषियों के अनुसार तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा है क्या। 'तप' का अर्थ है-शारीरिक साधना। ब्रह्मज्ञान के रास्ते पर जो चल रहा हो, उसे तपस्या से गुजरना आवश्यक है। क्योंकि ब्रह्मज्ञान का प्रथम साधन यह हमारा शरीर है। जिसका शरीर रोगी, निर्बल होगा, थोड़ी सी गर्मी-सर्दी सहन नहीं होगी, सिर दर्द, खांसी-जुकाम या बुखार हो जायेगा तब वह अध्यात्म के मार्ग पर कैसे चल सकेगा। उसे तो उसका शरीर ही हर समय सताता रहेगा। शरीर की चिन्ता से मुक्त होकर ही व्यक्ति साधना के पथ पर आगे बढ़ सकता है। ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति कर सकता है। दूसरा है 'ब्रह्मचर्य'। यहाँ ब्रह्मचर्य का अर्थ है-विषय-वासनाओं से मुक्त होना अर्थात् मानसिक साधना। जिसका मन हर समय विषयों की तरफ भटकता फिरेगा, तब अध्यात्म के मार्ग पर कैसे चल सकेगा। उसका तो मन ही उसे प्रत्येक क्षण तंग करता रहेगा। अतः मन पर संयम करके, मन को वासनाओं से मुक्त करके ही व्यक्ति ब्रह्मज्ञान का अधिकारी बनता है।

शरीर और मन के साधन के बाद तीसरी बात आती है, 'श्रद्धा' की। मन जब संकल्प-विकल्प के जाल से बाहर निकल कर ब्रह्मज्ञान के लक्ष्य पर दृढ़ता से आरूढ़ हो जाता है, तब श्रद्धा की अवस्था प्रकट होती है। ऋषि कहते हैं कि ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने के लिए मनुष्य की ये तीन अवस्थायें आवश्यक हैं। जब साधक तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा के कारण ब्रह्म पर, ब्रह्मनिष्ठ तथा ब्रह्मान्वेषण के लिए उत्सुक हो जाता है तभी वह ब्रह्मज्ञान का अधिकारी बनता है। महर्षि पिप्लाद का यही तो कथन है-'भूयः एव तपसा, ब्रह्मचर्येण श्रद्धसर संवत्सर-संवत्स्ययं', यद्यपि आप लोग तपस्या करके ब्रह्मचर्य का जीवन बिता कर श्रद्धापूर्वक आये हैं, तो भी एक बार और एक वर्ष के लिए मेरे पास निवास करो। बस 'तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा,' यही एक मात्र उपाय है, रास्ता है, ब्रह्मज्ञान प्राप्ति का। इसके अतिरिक्त 'नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।'

-वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक

साधकों के लिए स्वर्णिम अवसर

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव में दूषित वातावरण से दूर सुरम्य स्थान पर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित शौचालय, रसोई स्नानगृह आदि से युक्त योग-साधकों की साधना के लिए बाहर एवं भूमिगत कमरे उपलब्ध हैं। आप सादर आमन्त्रित हैं।

कृपया सम्पर्क करें:- 9416054195, 9812640989, 9813754084

www.thearyasamaj.org

सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

गतांक से आगे

–राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

तब उस प्रियवादी सुग्रीव को राम ने कहा, "हे सखे! उन्हें शीघ्र लावे इसमें विलम्ब न करें।" तब वह सुग्रीव गुहा में प्रविष्ठ होकर दुपट्टा और आभूषणों को लाया और राम को दिखाये। सीता के आभूषणों को देख और उन्हें पहचान कर राम बहुत दुःखी हुये ओर रूदन करते हुए पृथ्वी पर गिर पड़े और सर्प की भांति श्वास लेने लगे। लगातार आंसुओं के वेग वाला राम अपने समीप स्थित दुःखी हुए लक्ष्मण से बोले "हे लक्ष्मण! देख हरी जाती हुई जानकी ने यह दुपट्टा और आभूषण भूमि पर फेंके हैं "राम के उक्त वचन सुनने पर लक्ष्मण बोला कि, "मैं बाहुबन्द और कुण्डलों को नहीं जानता, हाँ प्रतिदिन चरणों में नमस्कार करने के कारण पांव के आभूषणों को पहचानता हूँ।" तब राम ने सुग्रीव से पूछा "हे सुग्रीव बतलाओं कि उस भयंकर रूप वाले राक्षस द्वारा किस दिशा में सीता हरी जाती हुई देखी है, मुझे इस विपत्ति में डालने वाला राक्षण कहां वास करता है, जिसके निमित्त मैं सब राक्षसों का नाश करूंगा।" सुग्रीव ने राम को वचन दिया कि आप शोक को त्याग दें। उस रावण को उसके सम्बन्धियों सहित मारकर मैं आपको प्रसन्न करूंगा। मैंने भी भार्या का वियोग सहा है लेकिन अपने धैर्य को नहीं त्यागा है और ना ही इस प्रकार शोक करता हूँ। जब साधारण पुरुष ऐसा शोक नहीं करते तो आप जैसे महात्मा, सुशिक्षित और शूरवीर को धैर्य नहीं त्यागना चाहिए, चाहे सामने कैसा ही दुःख उपस्थित क्यों न हो। जो पुरुष शोक में रहते हैं उनको सुख नहीं होता, उनका तेज भी क्षीण हो जाता है। हे राम! मैं मित्र भाव से यह सब आपको कह रहा हूँ" सुग्रीव के मधुर वाक्य सुनकर राम ने आंसुओं से भीगे हुए मुख को वस्त्र से साफ किया और सुग्रीव का आलिंगन करके बोला "हे सुग्रीव! बुद्धिमान मित्र का जो कर्त्तव्य होता है, उसी सदृश आपने मेरे लिए हितकारी वचन कह हैं। उनसे मैं पहले जैसी स्थिति में आ गया हूँ। निश्चित रूप से आप जैसा बन्धू मिलना दुर्लभ है। अब आप मेरे हित अपना कार्य करें तथा मैं अपना कर्त्तव्य करूंगा। हे सुग्रीव! शार्दूल मैनें जो "बालि का वध आदि" वचन अभिमान से कहे हैं उनको तुम सत्य ही जानना, मैं कभी अनृत भाषण नहीं करता।" इस प्रकार एक दूसरे के दुःख के निवारण का आश्वासन देने के पश्चात् दोनों प्रसन्न हुए। तत्पश्चात हर्ष को प्राप्त हुआ सुग्रीव मधुरवाणी में राम से बोला "भाई से अनादर

प्राप्त हुआ और भार्या के हरण से भयभीत हुआ। मैं इस ऋष्यमूक पर्वत पर फिर रहा हूँ, हे दूसरों के दुःखों को दूर करने वाले राम मुझ पर भी आप कृपा करने योग्य हैं" सुग्रीव के वचन सुनने के पश्चात राम ने सुग्रीव से कहा "मित्र उपकार के फल से पहचाना जाता है और अपकार करना शत्रु का चिह्न है। मैं शीघ्र ही तुम्हारी भार्या हरण करने वाले का वध करूंगा।" राम के इस प्रकार वाक्य सुनने के पश्चात् सुग्रीव ने कहा कि "हे राम इतना ही नहीं वह मेरा भाई बालि मेरे प्राण भी हरने की इच्छा रखता है लेकिन यह हनुमान आदि मेरे सहायक हैं। इन्ही के सहारे मैं अभी तक प्राणों को धारण किए हूँ। इसीलिए हे राम यह संक्षेप में मैंने अपना दुःख आपको कहा है क्योंकि दुःख में ही मित्र का सहारा होता है।" सुग्रीव के इस प्रकार कथन करने पर महातेजस्वी राम मुस्कुराकर बोले कि "हे सुग्रीव! मैंने अनुमान लगाया है कि आप भी शोकसागर में डूबे हुए हैं लेकिन आप निश्चित हो जाईये। मैं आपको इस शोक सागर में निकालूंगा और

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

www.thearyasamaj.org

निःसन्देह आप एक बड़े फल को प्राप्त होंगे।" यह सुनकर प्रसन्न हुआ सुग्रीव राम से यह वाक्य बोला

टिप्पणी:- सीता जी के आभूषण देखने के पश्चात् वाल्मिकी रामायण इस बात का प्रमाण है कि राम भी एक पुरुष थे। किस तरह से वे रूदन करते हैं, शोक करते हैं ओर फिर क्रोध करते हुए यह भी कहते हैं कि मैं इस पृथ्वी को राक्षसों से रहित कर दूंगा। ये सब बातें एक मनुष्य के लिए स्वाभाविक बाते हैं। दूसरा इसमें एक श्लोक की चर्चा कर रहे हैं जो इतिहास का प्रसिद्ध श्लोक है जिससे हमारे पूर्वजों के चरित्र के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। रामजेठमलानी जैसे लोग इसे जहां काल्पनिक व लक्ष्मण की भूल बता रहे हैं वहां लाखों भारतीय लक्ष्मण यती के चरित्र को जानकर गद्‌गद् हो जाते हैं और अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद। राजजेठमलानी जी पेशे से वकील हैं और आजकल एक ऐसे तथाकथित संत की जमानत कराने में प्रयासरत हैं जिसका सारा का सारा परिवार ही सैक्स रैकेट में फंसा हुआ है। यह भी जानकर अत्यन्त दुःख होता है कि इस रंगीले संत के पांच करोड़ के लगभग अनुयायी हैं। वाह रे बिना बुद्धि का प्रयोग किए अंधा अनुकरण करने वालों हम तो इतना ही कह सकते हैं कि परमात्मा इनको सद्‌बुद्धि दें।

आईये उस श्लोक का वर्णन करते हैं-

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले।
नूपुरे त्वमिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्॥

कि. 6 सर्ग 19,20 श्लोक

अर्थात हे राघव! मैं बाहुबन्द और कुण्डलों को नहीं पहचानता, हाँ प्रतिदिन चरणों में नमस्कार करने के कारण पांव के आभूषणों को पहचानता हूँ। आप अनुमान लगाकर देखें कि कितना आदर्श व उच्च चरित्र हमारे यहां होता था। अर्जुन ने भी एक साल तक उत्तराकौर का विवाह अभिमन्यु के साथ किया गया। अनेकों उदाहरण है लेकिन आज के युग में इन टी.वी. व फिल्म वालों की बदौलत कोई भी रिश्ता पवित्र नहीं रह गया है। अगर हम अपने इतिहास को पढ़े तो अवश्य ही हमारा नैतिक स्तर सुधरेगा। एक तीसरा विषय हम यहां रख रहे हैं कि सुग्रीव राम को कहता है कि:-

नाहंतामनुशोचामि प्राकृतो वानरोपिसन्।
महात्मा च विनीतश्च कि पुनर्धृतिमान्महान॥

कि. 6 वर्ग 6 श्लोक 6

जब हम साधारण पुरुष ऐसा शोक नहीं करते जो आप जैसे महात्मा और सुशिक्षित को कदापि धैर्य का त्याग नहीं करना चाहिए और भी बहुत सी शिक्षायें यहां सुग्रीव श्री रामचन्द्र जी को देते हैं। हम इस बात पर बल इसीलिए दे रहे हैं कि देखिए हम ही नहीं वानरपति सुग्रीव भी राम को केवल महात्मा ही मान रहे हैं, अवतार नहीं। रामचरित मानस में श्री सुग्रीव व श्रीराम मित्रता सम्बन्धी बातें शिक्षाप्रद हैं लो आप भी पढ़िये:-

जे न मित्र दुःख होहि दुखारी।
तिन्हहि बिलोकत पातक भारी॥
निज दुःख गिरि सम रज करि जाना।
मित्रक दुःख रज मेरु समाना॥

अर्थात् जो व्यक्ति अपने मित्र के दुःख में दुखी नहीं होता है, वह बड़े पाप का भागी है। जबकि अपना दुःख पर्वत के समान ओर मित्र का दुःख सुमेरु पर्वत के समान लगना चाहिए और भी आगे की चौपाईयों में लिखा है कि व्यक्ति को अपने मित्र को कुपथ से हटाकर सुपथ पर लाना चाहिए और उसकी विपत्ति काल में सहायता करनी चाहिए। ऐसा हमारे शास्त्रों मे लिखा है ओर आगे तुलसीदास जी लिखते हैं कि जो सामने मीठे वचन और पीठ के पीछे बुराई करते हैं ऐसे मित्रों से दूर ही रहें तो अच्छा है। मूर्ख सेवक, कंजूस, बुरी नारी और कपटी मित्र से भी दूरी बनाये रखने का उपदेश रामचरित्र मानस में लिखा मिलता है।

सम्पर्क करें

पारिवारिक अनुचित व्यवहारों से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता, वैमनस्य, ईर्ष्याद्वेष आदि में मनोवैज्ञानिक समाधान, वेद, दर्शन, उपनिषद गीता आदि साहित्य पर सुबोध व युक्ति पूर्ण प्रवचन वैदिक-यज्ञ तथा प्रभावोत्पादक ध्यान-योग साधना शिविरों हेतु सम्पर्क करें :

राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

www.thearyasamaj.org

स्ट्रोक जीती जा सकती है जंग

- विवेक शुक्ला

56वर्षीय उमाराय जादवानी पिछले 10 सालों से हाइपरटेंशन (हाई ब्लडप्रेशर) से ग्रस्त हैं, जिसे नियंत्रित करने के लिए वह डाक्टर के परामर्श से दवाएं भी ले रहीं थीं। एक दिन उन्हें हाथ और पैर में बेहद कमजोरी महसूस हुई और उन्हें बोलने में भी दिक्कत हुई और अचानक उनकी आवाज बंद हो गयी। उनके परिवार के वयस्क सदस्य यह समझ ही नहीं सके कि उन्हें अचानक कौन से रोग ने अपनी गिरफ्त में ले लिया है। लगभग एक घंटे तक वे इसी उधेड़बुन में रहे और उनसे बात करने का प्रयास करते रहे। इसके बाद वे उन्हें पड़ोस स्थित एक डाक्टर के पास ले गए, जिन्होंने ब्लडप्रेशर चेक करने और पेशेंट की हालत के मद्देनजर यह सलाह दी कि इन्हें आप शीघ्र ही न्यूरोलोजिस्ट या न्यूरो फिजीशियन के पास ले जाएं, क्योंकि पेशेंट सेरीब्रल स्ट्रोक या लकवा की गिरफ्त में है। इसके बाद उमा राय के परिजन उन्हें मेरे पास लाए। यह उनका सौभाग्य था कि स्ट्रोक होने के तीन घंटे के अंदर ही उनका इलाज शुरू हुआ, क्योंकि अगर साढे चार घंटे से ज्यादा का वक्त बीत चुका होता, तब स्ट्रोक के रोगियों को दिया जाने वाला एक इंजेक्शन प्रायः कारगर नहीं होता। ''यह कहना है मुंबई स्थित पी.डी. हिंदुजा हॉस्पिटल में न्यूरोलोजी डिपार्टमेंट के प्रमुख डा. पी.पी. अशोक का। उनके अनुसार जब तक आप किसी रोग के स्वरूप को नहीं समझते, तब तक आप उस बीमारी के बारे में सचेत व जागरूक नहीं हो सकते। यह बात स्ट्रोक के संबंध में भी लागू होती है। वस्तुतः जब मस्तिष्क को जाने वाली रक्त नलिकाओं (ब्लड वेसेल्स) में कुछ कारणों से रुकावट पैदा हो जाती है, तो इस स्थिति को सहज भाषा में सेरीब्रल स्ट्रोक, स्ट्रोक या मस्तिष्क आघात (ब्रेन स्ट्रोक) कहते हैं। जैसे दिल की रक्त नलिकाओं में अनेक कारणों से रुकावट होने से दिल का दौरा पड़ता है। ठीक वैसे ही मस्तिष्क की रक्त नलिकाओं में कई कारणों से रुकावट होने से स्ट्रोक रूपी गंभीर स्वास्थ्य समस्या पैदा होती है। मस्तिष्क में करोडों नसे (नर्व्स) होती हैं। दिमाग में स्थित हाथ से संबंधित नस के क्षतिग्रस्त होने से हाथ का लकवा, पैर की नर्व के क्षतिग्रस्त होने से पैर का लकवा लगता है। वह बताते हैं कि इस रोग की जांच सीटी स्कैन व एमआरआई द्वारा होती है।

स्ट्रोक के दो प्रकार होते हैं। पहला, इस्चीमिक/इस्कीमिक और दूसरा हेमोरेजिक। इस्चीमिक स्ट्रोक में थक्का (क्लॉट) जमने से रक्त की नलिका या रक्त वाहिनी (ब्लड वेसेल) बंद हो जाती है। वहीं हेमोरेजिक स्ट्रोक पड़ने का मुख्य कारण हाइपरटेंशन या हाई ब्लड प्रेशर है। दिमाग के अंदर रक्त की जब कोई नलिका फट जाती है, तो उस स्थिति को हेमरेज कहा जाता है।

रही बात रोकथाम की तो इस संदर्भ में हाई ब्लडप्रेशर और मधुमेह(डाइबिटीज से ग्रस्त लोगों को विशेष ध्यान रखना चाहिए। अन्य लोगों की तुलना में इन दोनों रोगों से ग्रस्त व्यक्यिों को स्ट्रोक पड़ने का खतरा अधिक रहता है। इसलिए हाई ब्लडप्रेशर के रोगी डाक्टर के परामर्श से अपने ब्लडप्रेशर को नियंत्रित रखें। इसी तरह मधुमेह रोगियों को भी अपने डाक्टर के परामर्श से शुगर लेवेल को नियंत्रित रखना चाहिए। इसके अलावा इन सुझावों पर अमल करें:

- ❑ शारीरिक निष्क्रियता से बचें और नियमित रूप से व्यायाम करें।
- ❑ डाक्टर या डाइटीशियन से परामर्श लेकर मोटापे पर नियंत्रण रखना चाहिए।
- ❑ सिगरेट और शराब से परहेज़ करें।
- ❑ डाइट में फलों और सब्जियों को वरीयता दें।
- ❑ नमक को संतुलित मात्रा में लें।

स्ट्रोक का इलाज पीडित व्यक्ति की स्थिति के अनुसार तीन प्रकार दवाओं (मेडिकल थेरेपी), सर्जिकल क्लिपिंग और जरूरत पड़ने पर 'क्वॉयलिंग' के जरिये किया जाता है।

इलाज के विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में मैक्स हॉस्पिटल, देहरादून के न्यूरोलोजी विभाग के प्रमुख सीनियर न्यूरो-सर्जन डा. ए.के. सिंह बताते हैं कि स्ट्रोक में खासकर हेमोरेजिक स्ट्रोक में एन्यूरिज्म की समस्या पैदा हो जाती है।

www.thearyasamaj.org

वस्तुतः एन्यूरिज्म की समस्या तब पैदा होती है, जब रक्तवाहिनी के एक भाग (धमनी) या कार्डिएक चैंबर में सूजन उत्पन्न हो जाती है। इस स्थिति में या तो रक्त वाहिनी नष्ट हो जाती है या फिर इसकी दीवार कमजोर हो जाती है। जब ब्लड प्रेशर का दबाव बढ़ता है, तब यह रक्तवाहिनी कमजोर भाग पर गुब्बारे की तरह का आकार बना लेती है। रक्त वाहिनी और कार्डिएक चैंबर में इस तरह की सूजन कम और बहुत ज्यादा हो सकती है। ज्यादा होने की स्थिति में यह सूजन पूरी रक्त वाहिनी को अपनी चपेट में ले सकती है। एन्यूरिज्म के बढ़ने पर इसके फटने का खतरा बहुत ज्यादा बढ़ जाता है। यह स्थिति गंभीर किस्म के हेमरेज और अन्य समस्याओं को पैदा कर सकती है। यही नहीं, इस स्थिति में पीड़ित व्यक्ति की अचानक मौत भी हो सकती है। इसी तरह मस्तिष्क की किसी एक धमनी में भी एन्यूरिज्म की समस्या पैदा हो जाती है।

मस्तिष्क में होने वाले एन्यूरिज्म (सेरीब्रल एन्यूरिज्म) के इलाज में मेडिकल थेरेपी तब कारगर सिद्ध होती है, जब एन्यूरिज्म फटता नहीं है। वस्तुतरू छोटे आकार का एन्यूरिज्म भी फट सकता है। एन्यूरिज्म के फटने (रप्चर) की स्थिति में इलाज के दूसरे विकल्प के रूप में सर्जिकल क्लिपिंग का इस्तेमाल किया जाता है। मेडिकल साइंस में हुई प्रगति के बावजूद सर्जिकल क्लिपिंग एक अत्यंत सूक्ष्म और तकनीकी तौर पर एक चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया है।

इसी तरह एन्यूरिज्म के इलाज का तीसरा विकल्प इंडोवैस्कुलर क्वॉयलिंग है। सन् 1995 में गुगलीलमाई डिटैचबल क्वॉयल्स के इस्तेमाल को मान्यता मिल जाने के बाद मस्तिष्क में होने वाले एन्यूरिज्म के इंडोवैस्कुलर ट्रीटमेंट में क्रांतिकारी परिवर्तन हो चुका है। वस्तुत सर्जिकल क्लिपिंग और इंडोवैस्कुलर क्वॉयलिंग, इन दोनों का ही साझा लक्ष्य एन्यूरिज्म में रक्त के प्रवाह को खत्म करना है। कहते हैं कि अगर चुनौतियां हैं, तो उनका समाधान भी है।

न्यूरो सर्जन के समक्ष स्ट्रोक के मामले में एक चुनौती दिमाग के अंदर रक्त के निकलने से संबंधित है। अगर स्ट्रोक के कारण मस्तिष्क के अंदर 10 एम.एल. से कम रक्त बहा है, तब पीड़ित व्यक्ति को सूजन कम करने वाली दवाएं दी जाती हैं। अगर रक्त 60 एम.एल. से ज्यादा निकला तब रोगी को बचा पाना मुश्किल होता है। 10 से 60 एम.एल. के बीच वाले रोगियों की स्थिति के अनुसार यह तय किया जाता है कि दवाओं से रोगी को लाभ मिलेगा या फिर सर्जरी से। वहीं दूसरी चुनौती स्ट्रोक के दुष्परिणामस्वरूप रक्त नलिकाओं (आर्टरीज) के सिकुड़ जाने से संबंधित है। पीड़ित व्यक्ति को जो कमजोरी महसूस होती है, वह आर्टरीज के सिकुड़ जाने से होती है। इस समस्या का नया इलाज भी उपलब्ध है। इस इलाज के अंतर्गत मस्तिष्क में क्वायलिंग के साथ स्टेंट भी डालते हैं। इस कारण दिमाग की रक्त नलिकाएं खुली रहती हैं।

डा. सिंह के अनुसार जिन मामलों में रोगी की ब्रेन सर्जरी करने की जरूरत होती है, तो ऐसे मामलों में 24 घंटे के अंदर सर्जरी कर दी जानी चाहिए। 24 घंटे के अंदर सर्जरी करने से रोगी अत्यंत लाभप्रद स्थिति में रहता है। इस अवधि को गोल्डन ऑवर कहा जाता है।

– साभार दैनिक जागरण

ओ३म्

स्वामी धर्ममुनि जी को यहाँ, धर्म ध्वजा लहराय रही।
आत्मशुद्धि आश्रम की चहुँ, ओर कीर्ति छाय रही।

वेदो का स्वाध्याय करें यहां, गुरुकुल के ब्रह्मचारी हैं,
वेद शास्त्रों की विद्या की, करते यहाँ तैयारी है,
विक्रमदेव शास्त्री और राजहंस आचारी है,
भोजन, वस्त्र, दूध, फल, पुस्तक, निःशुल्क वस्तु सारी है।
बहादुरगढ़ आश्रम की शिक्षा, सब के मन में भा रही।

नेत्र औषधालय धर्मार्थ, मिलती मुफ्त दवाई है,
गरीब असहाय बेचारो की यहाँ, करते रहे सहाई है,
ब्रह्मचारी न को दूध के लीये, गऊशाला खुलवाई है,
बृद्ध आश्रम वृद्धो के, लीये दीना बनवाई है,
सुन-सुन कर उपदेश यहाँ पर, नई चेतना आय रही।

आत्मशुद्धि आश्रम में रह, करें साधना योगी हैं,
आसन प्राणायाम करें सब, रहे न कोई रोगी हैं,
करें आत्म कल्याण मुनिजन, ना बिषियों के भोगी हैं,
जिन्हें साधना से नफरत है, उनको किस्मत सोगी है,
साधक और साधकायें सब, उज्जवल भविष्य बनाय रही।

– धनी राम बेधड़क

www.thearyasamaj.org

78वें जन्मोत्सव पर स्वामी धर्ममुनि जी को बधाईयां देकर आशीर्वाद लेते हुए की झलकियां

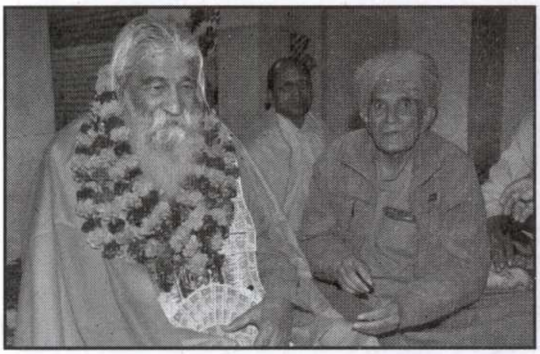
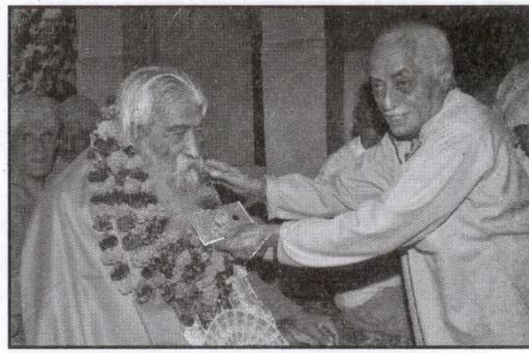

(विवरण पढ़े पृष्ठ 4 पर)

www.thearyasamaj.org

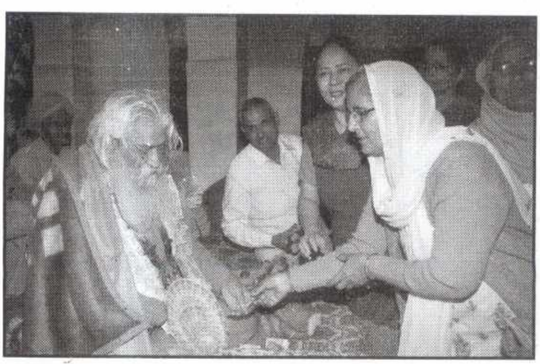

(विवरण पढ़े पृष्ठ 4 पर)

www.thearyasamaj.org

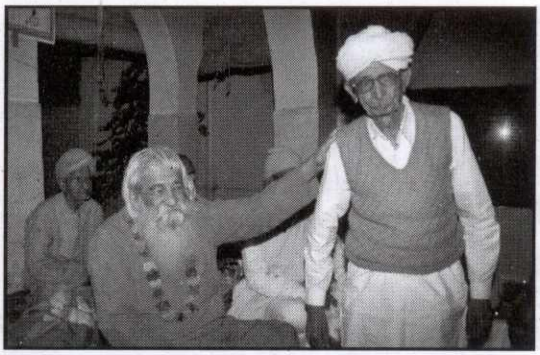
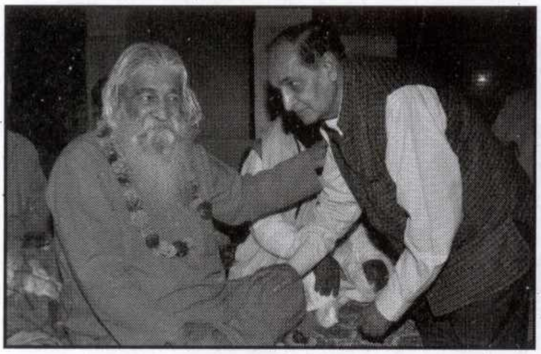

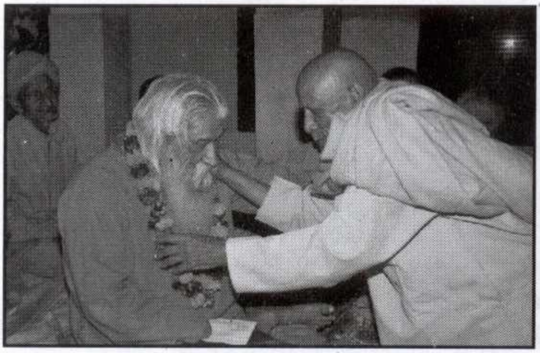

(विवरण पढ़े पृष्ठ 4 पर)

www.thearyasamaj.org

78वें जन्मोत्सव पर स्वामी धर्ममुनि जी को बधाईयां देकर आशीर्वाद लेते हुए की झलकियां

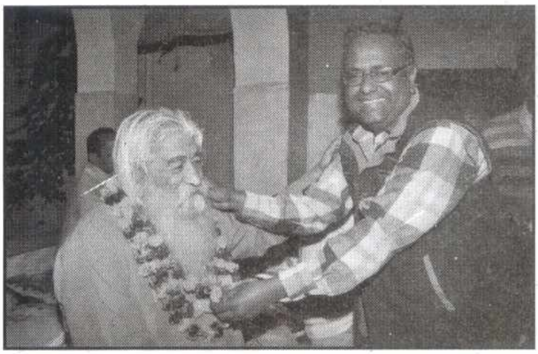

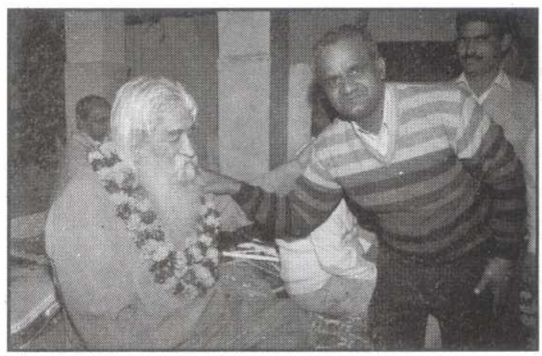

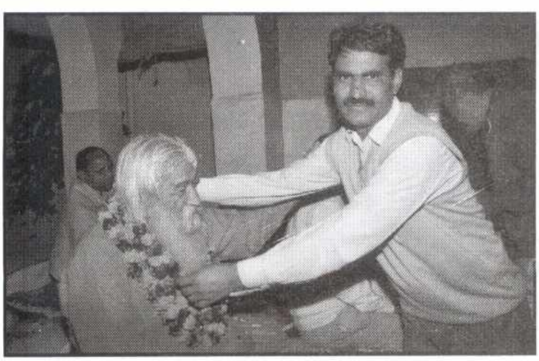

(विवरण पढ़े पृष्ठ 4 पर)

www.thearyasamaj.org

मुस्करा के जियो यह जीवन

- वानप्रस्थी अतर सिंह

एक कवि ने लिखा है:-

' ए शमा, तेरी उम्र तबीह है एक रात।
हंसकर गुजार, या इसे रो कर गुजार दे।।''

हंसकर गुजारोगे, तो रात जल्द कट जाएगी। परन्तु रोने-धोने से वह गम की लम्बी, अन्धेरी रात बन जायेगी। दुनिया में जो आये है, तो जीना ही पड़ेगा, क्यों न जीवन हंसकर गुजारें? माना कि तुम्हारे दिल ने बहुत सदमे सहे हैं, सख्त चोट खाई हैं और घाव बहुत गहरा है, परन्तु कराहने से क्या फायदा?

एक बार एक महात्मा के बाजू पर एक बहुत बड़ा फोड़ा निकल आया। वह दर्द से व्याकुल रहने लगा। जब कभी दर्द की टीस उठती, वह और भी उद्विग्न हो जाते। परन्तु आह-आह करने की बजाये, वह वाह-वाह पुकारते। क्या आप भी अपनी दुखमय परिस्थिति में आह-आह की अपेक्षा वाह-वाह नहीं कर सकते? आह-आह करने से पीड़ा तो कम होने से रही और नहीं तो, 'वाह-वाह' मानसिक बल की द्यौतिक अवश्य है।

कई बार जिन्दगी इन्सान के लिए विडम्बना बनकर रह जाती है। कोई उम्मीद पूरी नहीं होती। कोई बात सिरे नहीं चढ़ती। कदम-कदम पर निराशा का मुंह देखना पड़ता है और ऐसा अनुभव होने लगता है, मानो किस्मत हमें मुंह चिड़ा रही हो। ऐसी परिस्थिति में भी इन्सान को अपना मानसिक संतुलन नहीं खोना चाहिए। उसे भूलना नहीं चाहिए कि रात चाहे कितनी भी लम्बी क्यों न हो, आखिर मंगल प्रभात में बदल जायेगी और दिन निकल आयेगा।

किसी कारण जिन्दगी यदि एक भोंडा मजाक भी प्रतीत हो, तो उसके भोंडेपन को भूल जाओ और मजाक का आनन्द लो। कहते हैं एक बार एक निर्दोष मनुष्य को पुलिस ने शक की बिना पर चोरी के आरोप में पकड़ लिया। पुलिस उससे पूछ-ताछ करती रही और मार-पीट भी परन्तु वह सज्जन हंसते-हंसते मार-पीट सहता रहा। आखिर पुलिस वाले भी परेशान हो गये और उस आगन्तुक प्राणी से पूछने लगे, ''भले मानस, तू हंसा क्यों हैं? बार-बार हंसता चला जा रहा हैं?'' इस पर वह और भी जोर से हंसा और कहने लगा, ''अरे यार, मैं तो आप लोगों की अकल पर हंस रहा हूं। मैं बिल्कुल निर्दोष हूं, आप हो, कि मुझे खामुखाह पीटते ही जा रहे हो।'' पुलिस वालों को अपने आप पर बहुत अफसोस हुआ और उन्होंने उस निर्दोश सज्जन से क्षमा मांगी ली।

संसार में अनगणित दुःख हैं-शारीरिक, मानसिक अथवा आत्मिक। यहां बीमारी, गरीबी, बेरोजगारी और बुढ़ापे ने अपना डेरा डाल रखा है।

संसार में अनगणित दुःख हैं-शारीरिक, मानसिक अथवा आत्मिक। यहां बीमारी, गरीबी, बेरोजगारी और बुढ़ापे ने अपना डेरा डाल रखा है। यहां नेत्र-हीन, बहरे, गूंगे, पागल और अपाहिज प्राणियों की बेचारगी और बेबसी हमें दृष्टिगत होती है। हमारे मन को ऐसे दृश्यों से ठेस पहुंचती है। परन्तु क्या करें, दिल पकड़ कर रह जाते हैं। घबराने से काम नहीं चलता। इन सबका सही इलाज केवल हिम्मत और हौसला है। दुःख में हताश होने से दुःख बढ़ता है। हमें चाहिए कि हम इन मुसीबतों का उपचार सोचें और हालात पर काबू पाने का यत्न करें। कवि कहता है-

'बाहरों से तो बन सकती है कोई बात।
आहों से यह हालात संवरने से रहे।।'

इन्सान को चाहिए कि वह निरन्तर संघर्ष करे और दृढ़तापूर्वक कठिनाईयों का मुकाबला करें। आदमी अग्नि परीक्षा में से कुन्दन बनकर निकलता है। परीक्षा से भाग निकलना बहादुरी नहीं, भीरूता है। कहा है:-

''बशर को लाजम है कि मुस्करा के जिए।
वगरना आदमी उलझन है जिन्दगी के लिए।।''

सन्तोष की जरूरतः- कई लोगों को आप हमेशा परेशान और खोए हुए पायेंगे। वह बेचारे अपने विचारों के बोझ से दबे जाते हैं। उन्हें हर प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं, हर सुविधा उपलब्ध होती है, परन्तु मानसिक शान्ति नसीब नहीं होती, तृष्णा उन्हें चैन नहीं लेने देती। उन्हें यह चाहिए, वह चाहिए, उन्हें संसार की समस्त सम्पत्ति भी सन्तोष नहीं दिला सकती, उनकी भूख मिटने ही नहीं पाती।

www.thearyasamaj.org

सन्तोष दुनिया की सबसे बड़ी सम्पत्ति है। आधुनिक काल में सन्तोष की बहुत कमी है। मांगना हमारी प्रवृत्ति बन गया है। हम हर समय 'और, और' की रट लगाए रहते हैं। जो हमें प्राप्त है, उसके लिए भगवान् का कभी धन्यवाद तक नहीं करते। कवि कहता है:-

"दई दई क्यों करत है मूर्ख,
दई दई सो कबूल।"

हम भूल जाते हैं कि दुनिया में अन्य लोग भी हैं। उन्हें भी जीने का हक है। उन्हें भी जीवन-सामग्री की जरूरत है। दुनिया की सारी दौलत हमारे पास ही सिमट कर क्यों आ जाए?

निजी हित से ऊपर उठना मनुष्यता की सबसे बड़ी निशानी है। जब तक हम अपने संकुचित विचारों से ऊपर नहीं उठते, हमें दूसरों का ख्याल आ ही नहीं सकता। आजकल के लालसा और लोलुपता के वातावरण में परमार्थ अथवा दूसरों का भला सोचना कठिन-सा प्रतीत होता है। मैत्री और सौहार्द दिन प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं और जीवन की महक और मिठास मिट रही है। ऐसी परिस्थितियों में सुख और शान्ति की तलाश करना केवल मृग तृष्णा है। कहा है:-

" मैं मेरी सब जायगी। तब आएगी और॥
जब यह निश्चल होएगा। तब पावेगी ठौर॥"

दुनिया में आकर हमें हर उचित इच्छा को पूर्ण करने के लिए यत्न करने का पूरा हक है। परन्तु इच्छाओं के नीचे दब जाना कोई बुद्धिमता नहीं। आजकल के इन्सान की दशा दयनीय है। वह इच्छाओं की बड़ी गठरी सिर पर उठाए जीवन-पथ पर घिसटता, गिरता, ठोकरें खाता चला जाता है। उसके पैर लड़खड़ाने लगते हैं। सांस फूलने को आती है। परन्तु वह चलते रहने में विवश है। सुख और चैन उसको तभी नसीब हो सकते हैं जब वह अत्याधिक कामनाओं की बोझल गठरी को सिर से उतार दे और ईश्वर पर विश्वास रखकर अपना जीवन व्यतीत करना सीखे। एक उर्दू भाषा के कवि ने हमें ऐसा मार्ग दिखाया है:-

'अंबारे आरजू के सबब हैं यह लगजशें।
यह बोझ अपने सर से उतारो मुसाफिरो॥'

अर्थात् इच्छाओं के बोझ से ही हमारे पांव लड़खड़ाते है और हम सही मार्ग से विचलित हो जाते हैं। इसलिए मुनासिब यही है कि हम इस बोझ को सिर से उतार फेंके।

दूसरों की सहानुभूतिः- अक्सर देखने में आता है कि जो मरीज दूसरे बीमारों के स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना करता है, वह स्वयं जल्द अच्छा हो जाता है। हम यदि यह सोचें कि अन्य प्राणी भी हमारी तरह किसी मुसीबत में फंसे हुए हैं अथवा कोई न कोई यातना सहन कर रहे हैं, तो हमें मनुष्यमात्र से सहानुभूति हो जाएगी। फलतः किसी के दुःख-दर्द में शरीक होना हमारे लिए स्वाभाविक बन जाता है और होना भी ऐसा ही चाहिए। हमारे दो मीठें वचन बोलने से अथवा तसल्ली देने से हमारा तो कुछ खर्च नहीं होगा, परन्तु दूसरे की वेदना कम हो जायेगी और उसे मनोबल प्राप्त होगा। हमारा यह फर्ज है कि हम अपने जीवन-साथियों का साथ दें और उनके दुःखों का समाधान करने की कोशिश करें। यदि किसी कारण हम इसमें सफल न भी हो सकें, तो हम निर्दोष होंगे। कहा है-

'कृतयत्ने न सिद्धयति, को अत्र दोषः'

हमें भूलना नहीं चाहिए कि जल्या देर में हर मुश्किल दूर हो जाती है। यत्न जारी रखना चाहिए और ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। कवि कहता है:-

'आखिर तो खत्म होगी बगोलों की राह गुजर।
कुछ देर हौंसलों को उभारो मुसाफिरो॥"

नया दृष्टिकोणः- यह सत्य है कि संसार में बहुत कम लोग पूर्ण तौर पर सुखी हैं। वास्तव में कोई दिल दाग से खाली नहीं है। परन्तु अपने दुःखों का ढिंढोरा पीटना अथवा अपने घावों को दूसरों को दिखाते फिरना अकलमन्दी नहीं। आपको हर समय रोते-धोते देख दुनिया जल्द आप से मुंह मोड़ लेगी। कुछ नृशंस लोग आपकी हंसी उड़ाने लगेंगे और एक समय ऐसा भी आएगा जब आप इस भरी दुनिया में अपने आपको एकदम अकेला पायेंगे।

क्या आप अपने सोचने के ढंग को नहीं बदल सकते? हर दुःख का गुब्बार तो खुदबखुद निकलना अनिवार्य है। कुछ देर के बाद हमारे घाव भी भरने लगते हैं। फिर हम क्यों दिल पकड़े बैठे रहें? ऐसा करना अशोभनीय है। रोकर जीवन नहीं कट सकता। स्थायी रूप से तो हमें प्रसन्न रहना ही पड़ेगा। यह मानुषी मर्यादा और प्रतिष्ठा का सवाल है।

www.thearyasamaj.org

एक समय की बात है। मैं जल्दी-जल्दी बाजार की ओर जा रहा था। मेरा चेहरा कुछ तनाव में था। चलते-चलते एक मित्र पास से गुजर गया। मैं उससे कोई बात नहीं कर पाया और कदम बढ़ाने लगा। मित्र ने मुस्कराते हुए आवाज दे कर कहा-''क्यों भई, खैत तो है?'' मैं बिना कुछ उत्तर दिये आगे चलता गया। कुछ दूर और जाने पर मुहल्ले के एक पड़ौसी से भेंट हो गई। मुझे चिन्ताग्रस्त देख वह कहने लगा, ''भाई साहब, आपकी तबीयत कैसी है?'' मैंने उत्तर दिया, ''मैं ठीक हूं।'' और फिर आगे चल पड़ा। रास्ते में मैंने सोचा कि शायद मेरे चिंताग्रस्त होने के कारण ही मेरे पड़ौसी ने मेरे से मेरी कुशलता के बारे में पूछा था। खैर मैं पहले की तरह जल्द-जल्द पग उठाता और फोटोग्राफर की दुकान पर जा पहुंचा। मुझे किसी अन्य दफ्तर में नौकरी के लिए अर्जी देनी थी और इसके लिए मुझे अपनी फोटो भी भेजनी थी। फोटोग्राफर ने मुझे केमरा के सामने बिठाया और पट से बोला-कृपया मुस्कराईए।

"LOOK PLEASANT PLEASE"

मेरी आंखों के सामने अपने विचित्र व्यवहार की तस्वीर खिंच गई और रोकने पर भी मैं अपनी हंसी न रोक सका, फोटोग्राफर खुश था कि मैंने उसके आदेश का पालन किया।

परन्तु बात केवल शिष्टाचार अथवा दिखावे तक ही नहीं रह जाती। वास्तव में, खुशी हमें आन्तरिक तौर पर होनी चाहिए। मुझे इस सम्बन्ध में एक प्रिय मित्र की वार्ता याद है। यह बहुत साधारण वृत्ति के सज्जन थे। उन्होंने कहीं से यह पढ़ लिया कि 'हंसी स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी है।' बस वह आए दौड़े-दौड़े मेरे पास और कहने लगे, ''भारद्वाज-हंसना बहुत स्वास्थ्य-प्रद है, आओ हम भी हंसे।'' मैंने कहा ''सोम प्रकाश जी, आखिर कोई बात भी तो हो, हम कैसे हंसे?'' हमारे मित्र ने अपने हाथ पर हाथ मारा और 'हा, हा, हा, ... ' शुरु कर दी। मुझे अपने मित्र की सादगी पर बहुत हंसी आई। वह बार-बार अपने हाथ पर हाथ मार कर हंसते रहे और मैं उनको देखकर हंसता रहा।

ऐसी हंसी में दोष तो कुछ नहीं परन्तु हम इसे आन्तरिक हंसी नहीं कह सकते। हंसी वास्तव में वह है जो एक स्त्रोत की तरह फूट पड़े। इन्सान के शरीर और उसकी आत्मा को आच्छन्नदित कर दे। प्रायः देखने में आता है कि नन्हें-मुन्ने बच्चे अथवा ज्ञानी लोग भी आन्तरिक हंसी हंस सकते हैं। यह हंसी उनके रग-रग से, उनके रोम-रोम से टपका करती है। बच्चों की हंसी को हम अज्ञात सुख और महात्माओं की हंसी को ज्ञात सुख का नाम दे सकते हैं।

आज हमें एक नया दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है। घटनाओं के महत्व को सही रूप में देखने की आवश्यकता है। जब हम जानते हैं कि यह संसार क्षण-भंगुर है, तो फिर क्यों छोटी-छोटी उल्झनों में पड़कर दु:खी होते हैं? क्यों दीन-हीन अवस्था में दिन गुजारते हैं? आखिर हमें चिन्ता किस बात की है? कैसा डर है? हम उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर का अभिन्न अंश है। आत्म-विश्वास और ईश्वर प्राणिधान हमें कभी छोड़ना नहीं चाहिए। आप कभी डोलें और डगमगायेंगे नहीं। सरल, निष्कपट और निर्भीक जीवन आपको खुशियों से ओत-प्रोत कर देगा। बात केवल विश्वास और निष्ठा की है। कहा है:-

हर एक रंज में राहत है आदमी के लिए।
प्यामे मौत भी मुजदा है जिन्दगी के लिए।।

एक शोकातुर चेहरा सबके लिए एक प्रश्न-चिन्ह बन जाता है। लोग हमारा भला चाहें अथवा न चाहें, वह यह अवश्य चाहते हैं कि हम उन्हें हंस कर मिलें। हंसना एक व्यावहारिक आवश्यकता बन गया है। यह सर्वप्रियता की कुंजी है।

आपने उन लोगों के किस्से तो सुने ही होंगे जो किसी आदर्श पूर्ति के लिए हंस-हंस सूली पर चढ़ गए। ऐसे लोगों के लिए छोटी-मोटी कठिनाईयां क्या महत्व रख सकती है। जो हंस-हंस कर फांसी के फंदो को चूम सकते हैं, वह जीवन की विषमताओं से कब घबराने लगे?

हंसना हमारा पैदायशी हक है। इस पर कोई रोकथाम नहीं। हंसो और जियो, जियो और हंसो, यही जीवन है। मैं भी प्राय: दुनिया की दो-रूखी पर हंसा करता हूं। मुझे भौतिक सुखों की असारता भी बहुत हंसाती है। और सबसे अधिक कुझे अपने चंचल मन पर हंसी आती है। कवि कहता है:-

''जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है।
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं।।''

www.thearyasamaj.org

वर्तमान परिपेक्ष में शिक्षा से ही देश की उन्नति संभव...

- ब्र. शिवदेव आर्य

सुहृद पाठकवृन्द! हमने बहुशः पढ़ा व सुना है कि किसी भी राष्ट्र के उन्नयन अथवा अवनयन में वहाँ की शिक्षा पद्धति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अमेरिका जैसे देशों के विश्वमंच पर महाशक्ति के रूप में विद्यमान होने में भी वहाँ की शिक्षा पद्धति का महत्वपूर्ण योगदान है।

वर्तमान में हमारा देश अनेक जटिल समस्याओं से ग्रस्त हो रहा है। अतः इसका प्रमुख कारण हमारी दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति है। ऐसे समय में यदि देश को इन जटिलताओं से मुक्त करा सकती है तो वो है श्रेष्ठ शिक्षा पद्धति। क्योंकि शिक्षा में वो सामर्थ्य होता है जो देशहित को सर्वोपरि उदित करता है। यह तथ्य हम सभी स्वीकार करते है कि देश के वर्तमान, भविष्य का प्रमुख आधार शिक्षा पद्धति एवं शिक्षित वर्ग ही होता है। आज समाज में तथाकथित शिक्षित जन देश को दिशा व दशा देने वाले दृष्टिगत होते हैं पुनरपि हमारा देश समस्याओं के तिमिरान्धत्व में विचलित होता जा रहा है, आखिर क्यों? ऐसा क्या हुआ? आज शिक्षा की तो कोई कमी नहीं, हर प्रकार से उच्च से उच्च शिक्षा दी जा रही है।

तथाकथित उच्च शिक्षा को प्राप्त किए हुए नायक भी घोटाले, रिश्वतखोरी, बलात्कार जैसे अनेक दोषों में लिप्त दिखायी देते हैं। इन सबको हम देखते है तो इस नतीजे पर पहुँचते है कि-कहीं-कहीं हमारी शिक्षा पद्धति (जो अधिकांश मैकाले की देन ही है) दोषपूर्ण है। यदि विचार करें विश्वगुरु भारत का तो हमारा ध्यान जाता है, उस प्राचीन युग पर जब हमारा राष्ट्र उन्नति के शिखर पर था भले ही आज हमारे युवा विद्यार्थी विदेशों में पढ़ना गौरव व गुणवत्तपूर्ण समझते हो। वस्तुतः यह प्राचीन पद्धति का ही उत्कर्ष था कि उस समय समस्त विश्व में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र भारत ही था। जिसके कारण लोग कहा करते थे कि-

एतत् देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

दुर्भाग्यवश हमने उच्च आदर्श युक्त आर्ष शिक्षा पद्धति की अवमानना कर आधुनिकता के आवरण में एक ऐसी पद्धति को अपना लिया है, जो हमें हमारे आदर्शों से अवगत करा रही है, जो हमें हमारे मूल से पृथक कर रही है।

आज आवश्यकता है कि हम अपनी आधुनिक शिक्षा योजनाओं में आर्ष शिक्षा के उच्चादर्शों का समावेश करें। आर्ष शिक्षा वह है जो ऋषिकृत शिक्षा पद्धति है (ऋषिणा प्रोक्तमार्षम्)। अनार्ष शिक्षा (आधुनिक शिक्षा) वह है जो आज विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में प्रदान कराई जा रही है। आर्ष शिक्षा में नैतिकमूल्यों के उन पहलुआ को उद्धृत किया गया है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति निजी तुच्छ स्वार्थो को छोड़कर देशहित में अपने हित को समझते हुए कार्य करने की भावना को दर्शाया गया है। जहाँ देशहित, व्यवहारिक तथा नैतिकमूल्यों की शिक्षा प्रदान कराई जाती है परन्तु आज की शिक्षा में ये दृष्टिपात नहीं हो पा रहा है। आज की शिक्षा पद्धति को व्यक्ति धन कमाने का द्वार मानता है। ये भी गलत नहीं है कि हम धन न कमायें। धन कमाना चाहिए, क्योंकि धन कमाना भी शिक्षा का उद्देश्य ही है परन्तु उस धन को गलत तरीकों से नहीं कमाना चाहिए। आज लोग लाखों-लाखों रूपये देकर एम.बी.ए., एम.बी.बी.एस. आदि डिग्रियों को प्राप्त कर लाखों रूपये की धूस देकर नौकरी को प्राप्त करते हैं और नौकरी प्राप्त करने के बाद जो पैसा उन्होंने नौकरी को प्राप्त करने में लगाया है उसे सर्वप्रथम निकालते हैं। चाहे उस समय अधर्म हो रहा हा या धर्म हो रहा हो, उसकी उन्हें कोई चिन्ता नहीं होती।

आज एक स्कूल में अध्यापकों का उद्देश्य शिक्षा देना नहीं होता उनका उद्देश्य तो पैसा कमाना होता है। महीना पूरा हुआ कि उनको अपने वेतन की चिन्ता होने लगती है। छात्र भी लाखों रूपये देकर शिक्षा का प्राप्त करते है इससे इनके अन्तःकरण में भी ये भाव उत्पन्न हो जाते है कि हमने तो बहुत-सा धन खर्च कर शिक्षा को प्राप्त किया है तो मेरा प्रथम धन

www.thearyasamaj.org

कमाना ही होगा न कि शिक्षा देना। परन्तु आर्ष शिक्षा पद्धति को दृष्टिगत करें तो ज्ञात होता है कि आर्ष शिक्षा पद्धति में नि:शुल्क शिक्षा प्राप्त करने व कराने का विधान है, इसीलिए उनका उद्देश्य केवल मात्र विद्या की उन्नति ही होता है। ऋषि लोग मन्त्रद्रष्टा होते हैं, वो आर्ष-शिक्षा पद्धति के माध्यम से सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की भावना को प्रस्तुत करते हैं।

हमें आधुनिक शिक्षा पद्धति को भी छोड़ने की आवश्यकता नहीं है अपितु उस शिक्षा व्यवस्था में जो दोष हैं, उनको हटा कर आर्ष शिक्षा पद्धति के मन्तव्यों को स्वीकार करना पड़ेगा, जो उन्नति के उच्च शिखर को स्थापित करते हो।

यदि हम राष्ट्र निर्माण चाहते है तो निश्चित है आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में आर्ष शिक्षा को समाहित करना ही होगा तभी जाकर राष्ट्रनिर्माण सम्भव हो सकेगा। अन्तिम निर्णायक तो आप सभी पाठक ही हैं। आप अपने सुझावों का प्रषित करें, आपके सुझावों की प्रति में...... - **गुरुकुल-पौन्धा, देहरादून**

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. चौ. मित्रसेन जी सिन्धु आर्य, उद्योगपति, रोहतक
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री स्वदीप दास जी गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
48. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
49. चौ. हरनाथ सिंह जी राघव, खेड़ला, गुड़गांव
50. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
51. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
52. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
53. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
54. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
55. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
56. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
57. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
58. यज्ञ समिति झज्जर
59. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
60. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
61. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
62. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
63. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
64. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
65. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
66. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
67. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
68. सुपरिटेन्डन नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली

www.thearyasamaj.org

ध्यान के लिए नियमित अभ्यास जरूरी:दुग्धाहारी

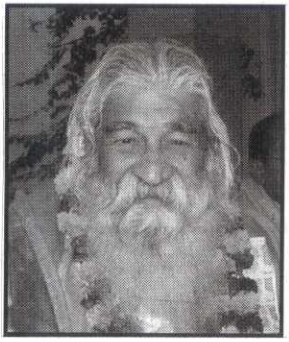

आत्म शुद्धि आश्रम में श्रद्धालुओं के बीच प्रवचन करते हुए स्वामी धर्म मुनि दुग्धाहारी ने कहा कि ध्यान के लिए नियमित अभ्यास बेहद जरूरी है। ध्यान में पूर्व कर्म, मुख्य कर्म व उत्तर कर्म का विशेष महत्व है।

उन्होंने कहा कि ध्यान के लिए जो सबसे महत्वूपर्ण विषय है वह मनुष्य का नियमित होना है और इसमें पूर्व कर्म, मुख्य कर्म व उत्तर कर्म का विशेष महत्व है। साधना में बैठने से पूर्व की तैयारी पूर्व कर्म कहलाता है और पूर्व साध क का कर्तव्य है कि साधना के लिए एक स्थान निश्चित करे और फिर उस स्थान पर आसन लगाकर आसन पर बैठकर ध्यान लगाए। मानव को ध्यान के लिए स्थान के साथ समय भी निश्चित कर लेना चाहिए। इसका विशेष ख्याल रखना चाहिए कि हर रोज किए जाने वाले ध्यान के लिए आसन एक ही होना चाहिए लेकिन ध्यान करने वाले आसन पर भोजन कभी नहीं करना चाहिए। ध्यान के लिए प्रयोग किया जाने वाला आसन न बहुत ऊंचा होना चाहिए और न ही नीचा होना चाहिए। उन्होंने कहा कि ध्यान की उपासना करते समय मनुष्य को साफ व स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए और उन वस्त्रों को अन्य वस्त्रों से अलग रखना चाहिए। जिन वस्त्रों को पहनकर हम उपासना करते हैं उन्हें किसी कार्य में नहीं पहनना चाहिए। मानव को ध्यान रखना चाहिए कि उपासना की विधि एक ही होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि यह कर्म उपासना का है। उपासना के समय आसन ग्रहण करने पर गति शून्य होनी चाहिए और कम से कम एक घंटा ध्यान लगाकर भगवान की उपासना करनी चाहिए। उत्तर कर्म पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि दिन भर की गतिविधियों व्यवहार यम नियमों को हमेशा याद रखना चाहिए और ब्रह्म अर्थ का पालन करना चाहिए।

धर्म के अनेक रूप

1. धरति विश्वं य: स धर्मः= जो विश्व को धारण करे वह धर्म है।
2. ध्रियतेऽध: पतन पुरुषोऽनेनेति धर्मः= जो नीचे गिरने वाले पुरुष की रक्षा करे वह धर्म है।
3. ध्रियते जनैरिति धर्मः= जो मनुष्यों द्वारा धारण किया जाता है, वह धर्म है।
4. धरति लोकानमिति धर्मः= जो लोको को धारण करे वह धर्म है।
5. धरतीति धर्मः= जो धारण करे वह धर्म है।
6. श्रुतिस्मृति विहितोधर्मः= श्रुति और स्मृति में जो विधान किया गया है, वह धर्म है।
7. चोदना लक्षणोऽर्थो धर्मः= (मीमाँसा) वेद में विधिवाक्यो द्वारा जो बलताया गया है वह धर्म है।
8. यतोऽयुदयनि: श्रेयस सिद्धि स धर्मः= (वैशेपिक) जिससे इस लोक में उन्नति और परलोक में मोक्ष की प्राप्ति हो, वह धर्म है।
9. वेद प्राणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद विपर्य्य:। श्रीमद भागवत। अर्थात वेद ने जिन कर्मो का विधान किया है, वह धर्म और उनके विपरीत अधर्म है।
10. श्रुति स्मृति विहित श्रेयसम्पादको धर्मः=वेद और स्मृति से विहित, मोक्ष को देने वाला धर्म है।
11. वेद स्मृति सदाचार: स्वस्य च प्रिययात्मन:। एतच्चतुर्विधमं प्राहु: साक्षात्धर्मस्य लक्षणम:।। अर्थात- वेद, स्मृति, सदाचार और अपनी आत्म को प्रिय लगने वाला कर्म करना। यह चार प्रकार का साक्षात लक्षण कर्म कहा गया है।
12. धारणाद्धर्म इत्यार्हुधर्मो धारयतेंप्रजा यत्स्याद धारण संयुक्त स धर्म इति सृष्टि को कारण करने से धर्म इति सृष्टि को धारण करने से धर्म कहा जाता है, धर्म प्रजा को धारण करता है। जो धारण के साथ रहे वह धर्म है यह निश्चित है।
13. धृति, क्षया, दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रह:। र्धी विद्या सत्यंअक्रोधो दशकर्म धर्म लक्षणम्।। मनुस्मुति
14. अहिंसा, सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रह:। दान दया क्षम: क्षान्ति सर्वेषां धर्म साधनम्।। अहिंसा, सत्य, अस्तेय शौच, इन्द्रिय-निग्रह, दान, दया, दम और क्षान्ति (अपनी हानि होने पर भी क्रोध न करना) ये सभी धर्म के लक्षण है।

- मनुदेव वानप्रस्थी, आत्मशुद्धि आश्रम

www.thearyasamaj.org

हंसो और हंसाओ

- स्कूल और गर्ल्स कॉलेज में डिफरेंस क्या है?
  स्कूल के बाहर गाड़ी धीरे चलाए का बोर्ड लगा होता है जबकि गर्ल्स कॉलेज के सामने नहीं लगता क्योंकि अच्छी-अच्छा गाड़ियां भी गर्ल्स कॉलेज के सामने धीरे चलती हैं।
- संता-मैंने सुना है तुम्हारी शादी तय हो गई है। वह भी काफी छोटे कद की लड़की से और तुमने उसे पसंद भी कर लिया है।
  बंता- हां यार जीवन में मुसीबत जितनी छोटी हो उतना ही अच्छा है।
- अध्यापक- अचार के पर्यायवाची बताओ?
  विद्यार्थी- दुराचार, भ्रष्टाचार, कदाचार, अत्याचार
- एक ग्रामीण एक कुत्ता लेकर आता है और ठंड में उसे नहलाता है।
  अन्य व्यक्ति-अरे ठंड में मत नहला मर जायेगा
  ग्रामीण- तू जा ना
  अन्य व्यक्ति- घुम फिर कर आता है तो कुत्ता खम्भे के पास मरा मिलता है।
  व्यक्ति-अरे मार दिया ना
  ग्रामीण- अरे ये नहाते वक्त नहीं। निचोड़ते वक्त मरा है।
- रावण-पप्पु से आपके पास बीड़ी है।
  पप्पु- नहीं है
  चप्पु- बाद में बोलता है-तेरे पास तो बण्डल था
  पप्पु-यार उसके दसमूहे है सारा का सारा बण्डल पी जायेगा।

- रवि शास्त्री आत्मशुद्धि आश्रम

भ्रष्टाचार की आग

भ्रष्ट है नेता, भ्रष्ट है समाज,
भ्रष्ट हैं हम, भ्रष्ट हैं आप
चारों तरफ है फैली, भ्रष्टाचार की आग
इस आग में झुलस रहा आम इन्सान
पल-पल मरता, हर पल सहता रहता है,
जो भ्रष्टाचार वह है सिर्फ तेरे जैसा,
मेरे जैसा इक आम इन्सान।
कौन देगा इसका जवाब?
आखिर कैसे खत्म होगा ये भ्रष्टाचार?
ना अन्ना के पास है इसका जवाब,
और ना ही दे पायेंगे रामदेव इसका जवाब।
सच तो ये है पूछो अपने दिल से खुद तुम
मिल जाएगा सही जवाब.....
आओ सब मिलकर दें, सही जवाब
करें इस ला ईलाज बीमारी का इलाज....
सजग रहें हम, सजग रहें आप,
क्योंकि चारों तरफ ही लगी है,
''भ्रष्टाचार की आग''

-श्रीमती सुदेश सन्दूजा, धर्मपुरा, बहादुरगढ़

शाल बांटे गए

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुर में आश्रम के छात्रों के लिए श्रीमती राम दुलारी बंसल की सद्प्रेरणा से कैनरा बैंक के चीफ मैनेजर अमिताभ चटर्जी, इन्द्रजीत गिरधर, सीनियर मैनेजर एवं अन्य स्टाफ के सभी मेम्बर केनरा बैंक शाखा बहादुरगढ़ के सदस्यों ने उपस्थित होकर छात्रों को 40 शाल भेंट किए तथा फलादि अन्य खाद्य सामग्री वितरित की। हम आत्मशुद्धि आश्रम की और से सभी बैंक परिवार की सुख समृद्धि की मंगल कामना करते हैं।

www.thearyasamaj.org

एक बार फिर आना होगा....

पाखण्डो के गढ़ में फिर वेदों का शंख बजाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

खूब हो रही पत्थर-पूजा, निराकार प्रभु को हैं भूले।
नए नए पाखण्ड रचा कर, ढोंगी दलदल बाबा फूले।।

ऐसे धूर्त ठगो को अब सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

भारत में हिंदी की देखो कैसी दुखद हुई है दुर्गति?
जन-मानस में फिर स्थापित हो हिन्दी, ऐसी दो सन्मति।।
भारत माँ को हिन्दी के किरीट से पुनः सजाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

नारी आज भोग्या बन कर भारत भर में लुटी पिटी है।
मातृ शक्ति को पूजित, सम्मानित करने की वृत्ति मिटी है।।
फिर से नारी को भोग्या से पूज्या हमें बनाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

गूँजे बेटी की किलकारी, ऐसी बहे स्नेह की गंगा।
कन्या-भ्रूण मिटाने वालों को समाज में कर दें नंगा।।
बेटी के हत्यारों को अब फाँसीपर लटकाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

भारत में कट रहीं आज भी नित नित लाखों गौ माताएं।
इनकी दारूण व्यथा कथा हम किसे सुनाएँ? किसे बताएँ??
जन जन में जा कर गौ करूणा निधि का अलख जगाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

भूले माता-पिता की सेवा, भूले वृद्ध जनों का आदर।
गुड्डा गुड़िया पूज रहे हैं, चढ़ा रहे कब्रो पर चादर।।
दसवाँ, मृतक भोज, तेरही, बरखी है व्यर्थ, बताना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

शाकाहार त्याग कर दुनिया हुई जा रही मांसाहारी।
धूम्रपान अरू मद्यपान से दस दिश फैल रही बीमारी।।
हो आहार विहार सात्विक, यह सबको समझाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

पर्यावरण अशुद्ध हो रहा, प्रकृति हो रही है नित आहत।
जल, थल, वायु हो रहे दूषित, यज्ञ मात्र से होगी राहत।।
यज्ञ सर्व जन के हित में है, सबको यज्ञ कराना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

नया नाम डेटिंग काले कर, खूब वैश्यावृत्ति हो रही।
नवयुवकों में बेशर्मी से इसकी अति आवृत्ति हो रही है।।

सत्रह बार जहर खाया है, कई बार फिर खाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

वेद प्रचारित करने खातिर ईंटे, रोड़े, पत्थर खाए।
कष्ट सहे जीवन भर लेकिन अडिग रहे, तुम ना घबराए।।
वेदो के दीपक पर क्या तुम सा कोई परवाना होगा?
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

पाखण्डों के गढ़ में फिर वेदों का शंख बजाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

-**हरि कुमार साहू**, पूर्व मंत्री, आर्य समाज,
गोंड़पारा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

धरती माँ

सब देवता बैठे बतिया रहे थे परस्पर
वाक युद्ध में निशाना बना रखा था ''धरती मां'' को
प्रथम वाक्-वाण निकला ''वायु'' के मुख से
रोक दूं मैं यदि सप्लाई अपनी हो जाएंगे तेरे पुत्र निरात्मा''
दूसरा तीर छोड़ा 'अग्नि'' ने मैं ही तो करती हूँ सहायता तेरी
पालना में तेरे पुत्रों की पुत्रियों की''
डींग मारी अब 'वरूण' देवता ने ''बिना मेरे भला कैसे
रख पाओगी जीवित अपनी संतानों को''?
अब तक शान्त बैठी धरती माँ बिफरी!
''तुम सब मारते हो थप्पड़ मेरी संतानो को
कभी जला कर उनको मृत्यु की नींद सुलाते हो लाखों को
बहा ले जाते हो कभी मेरे पुत्रों की विपुल रचनाओं को,
बाढ़ लाकर नदियों में, सुनामी समुद्रो में''
आकाश मज़े ले रहा था अब तक सब सुन सुन कर
बोला धरती! तेरा अस्तित्व संभाले हूं मैं बाहों में अपनी
घबराती क्यों हों इनकी अहंकार भरी धमकियों से
मैं हूं न तुम्हारे साथ! हम मिलकर रक्षा करेंगे
पुत्रों की पुत्रियों की''
उत्साहित होकर बोली धरती ''मैं बचा लूंगी
संतानों को अपनी आखिर! मैं माँ हूं इनकी!

- **जयदेव हसीजा ज्ञानप्रस्थी,**
124, विस्ता विलाज, सैक्टर-46, गुड़गांव

www.thearyasamaj.org

सत्यार्थ प्रकाश प्रश्नोत्तरी भूमिका के अनुसार प्रश्नोत्तर

- कन्हैया लाल आर्य

प्र.23 परमेश्वर का नाम 'तैजस' क्यों है?

उत्तर जो आप प्रकाश स्वरूप और सूर्यादि लोकों का प्रकाश करने वाला है इससे उस परमेश्वर का नाम 'तैजस' है।

प्र.24 परमेश्वर का नाम 'ईश्वर' क्यों है?

उत्तर जिसका सत्य विचारशील ज्ञान और अनन्त ऐश्वर्य है इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'ईश्वर' है।

प्र.25 परमेश्वर का नाम 'आदित्य' क्यों है?

उत्तर जिसका विनाश कभी न हो इससे उस परमेश्वर का नाम 'आदित्य' है।

प्र.26 परमेश्वर का नाम 'प्राज्ञ' क्यों है?

उत्तर जो निर्भ्रान्त ज्ञानयुक्त सब चराचर जगत् के व्यवहार को यथावत् जानना है इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'प्राज्ञ' है।

प्र.27 परमेश्वर को 'मित्र' क्यों कहा है?

उत्तर जो सब से स्नेह करके और सबसे प्रीति करने योग्य है इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'मित्र' है।

प्र.28 परमेश्वर का नाम 'वरूण' क्यों है?

उत्तर जो आत्मज्ञानी, विद्वान, मुक्ति की इच्छा करने वाले धर्मात्माओं का स्वीकारकर्त्ता और सबसे श्रेष्ठ होने के कारण परमेश्वर को 'वरूण' कहा गया है।

प्र.29 परमेश्वर को 'अर्यमा' क्यों कहा गया है?

उत्तर जो सत्य न्याय के करने हारे मनुष्यों को मान्य और पाप तथा पुण्य करने वालों को पाप और पुण्य के फलों का यथावत सत्य सत्य नियमकर्त्ता है इसी से उस परमेश्वर का नाम 'अर्यमा' है।

प्र.30 परमेश्वर को 'बृहस्पति' क्यों कहा गया है?

उत्तर जो बड़ों से भी बड़ा और बड़े आकाशादि ब्रह्मांडों का स्वामी है इसी से उस परमेश्वर का नाम 'बृहस्पति' है।

प्र.31 परमेश्वर का नाम 'उरुक्रम' क्यों है?

उत्तर अनन्त पराक्रम युक्त होने से परमेश्वर का नाम 'उरुक्रम' है।

प्र.32 'शान्ति पाठ' के मन्त्र में 'ओ३म् शान्तिः, शान्तिः' तीन बार क्यों बोली जाती है?

उत्तर इस संसार में तीन प्रकार के दु:ख हैं (1) आध्यात्मिक: जो आत्म में अविद्या, राग, द्वेष, मूर्खता और ज्वर पीड़ादि होते हैं। (2) आधिभौतिक: जो शत्रु, व्याघ्र और सर्पादि से प्राप्त होता है। (3) आधिदैविक- जो अतिवृष्टि, अतिशीत, अति उष्णता मन और इन्द्रियों की अशान्ति से होता है। तीन बार शान्तिः शान्तिः शान्तिः' इन तीन प्रकार से दु:खो से छुड़ाने की प्रभु से प्रार्थना की जाती है।

प्र.33 परमेश्वर का नाम 'सूर्य' क्यों है?

उत्तर जो प्राणी एवं अप्राणी जगत् के आत्मा होने और स्वप्रकाश स्वरूप सबके प्रकाश करने से परमेश्वर का नाम 'सूर्य' है।

प्र.34 परमेश्वर का नाम 'परमात्मा' क्यों है?

उत्तर जो सब जीव आदि से उत्कृष्ट और जीव, प्रकृति तथा आकाश से भी अति सूक्ष्म और सब जीवों का अर्न्तयामी आत्मा है इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'परमात्मा' है।

प्र.35 परमेश्वर का नाम 'परमेश्वर' ही क्यों है?

उत्तर सामर्थ्य वाले का नाम ईश्वर है। जो समर्थों में समर्थ, जिसके तुल्य कोई भी न हो उसका नाम 'परमेश्वर' है।

प्र.36 परमेश्वर का नाम 'सविता' ही क्यों है?

उत्तर, जो सब जगत् की उत्पत्ति करता है इसलिए परमेश्वर का नाम 'सविता' है।

प्र.37 परमेश्वर का नाम 'देव' 'देवी' क्यों है?

उत्तर जो किसी के सहाय के बिना क्रीडावत् सहज स्वभाव से सब जगत् को बनाता व सब क्रीडाओं का आधार है, जो सदा हर्षित, शोक रहित और दूसरों को हर्षित करने और दुखों से पृथक करने वाला होने के कारण परमेश्वर का नाम 'देव' 'देवी' है।

www.thearyasamaj.org

भारतीय संस्कृति के विनाश का पहला और बड़ा कारण-हमारी अंधश्रद्धा

- डॉ. रेखा शास्त्री

आज के वैज्ञानिक युग में, आधुनिकता के जमाने में हमें उन्नत देशों की भांति नए-नए अविष्कार कर हर प्रकार के साधनों से परिपूर्ण होने के अवसर मिले हैं। परन्तु ऐसा क्या कारण है जिससे हम प्राचीन काल के स्वर्णिम भारत के समान उन्नत न होकर केवल प्रगतिशील अर्थात् उन्नति के पथ पर अग्रसर का नामकरण लिए हुए है जबकि भारत का प्राचीन समय में जब आर्यावर्त के नाम से प्रसिद्ध था तब पहले पुरातन काल में चक्रवर्ती राज्य कहलाता था। ऐसा क्या हो गया, हमसे क्या खो गया कि हमारा प्यारा भारतवर्ष आज पिछड़े देशों में गिना जाने लगा है इस सबका वास्तविक कारण था वेद एवं वेदज्ञान का लुप्त प्राय: हो जाना। प्राचीन समय में आर्यावर्त की उन्नति का सबसे बड़ा कारण हमारे लोगों का वेदानुसार आचरण था। लेकिन पोपलीला के कारण जब पुराणों का प्रकाश हुआ तब सबकुछ विकृत हो गया। लोगों के आचरण धीरे-धीरे क्षीण होते गए और ईश्वरोपासना के स्थान पर मूर्ति-पूजा, श्राद्ध, मृत्यु-भोज, केदारनाथ, बद्रीनाथ आदि चार धाम की यात्रा, देवी जागरण, भूत-प्रेत व झाड़ फूंक, गंगा स्नान, कावड़, बलि प्रथा, सती प्रथा, राधा कृष्ण का प्रेम प्रसंग (रासलीला) फलित ज्योतिष आदि-आदि (इतने विषय है कि गिनाना कठिन होगा) का प्रचार वेदों के नाम पर होने लगा। पुराणों ने हमारे इतिहास को, हमारी सामाजिक व्यवस्था को विकृत कर दिया हैं। वेदों से जहाँ हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें सदैव सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करने का उद्यत रहना चाहिए वहीं पुराण इसके विपरीत है पौराणिक पाखण्डियों के अनुसार जो भी उनमें लिखा है जैसा लिखा है वैसा मान लेना चाहिए विचार-विरोध न करना चाहिए। वेद का नाम लेकर ऋषियों के नाम लेकर, श्रीराम, श्रीकृष्ण एवं महात्मा शिव आदि महापुरुषों का नाम लेकर जो पाखण्ड इन पंडों ने फैलाया है उसका तो क्या कहें सारे के सारे विनाश की जड़ ही यही है। आदर्शवादी मर्यादा पुरुषोत्तम राम पूजनीय हैं। उनके सत्कार्यो के अनुरूप ही उन्हें भगवान की उपाधि मिली लेकिन आज उनकी मूर्ति बनाकर उनके आचरण को, उनके चरित्र को आदर्श (अनुकरणीय) ना मानकर, उनके चित्र की पूजा प्रारम्भ कर दी। श्रीराम ने वेदादि आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया, यज्ञ किए तथा कराए क्या हम करते हैं? क्या इन पंडितों ने श्री राम के ही अनुरूप वेदादि शास्त्रों को पढ़ा है? नहीं। क्योंकि यदि स्वयं पढ़ा होता व क्षत्रियों को पढ़ाया होता वैसा ही आचरण करते तो ढोंग और पाखण्ड का जो बोल-बाला चारों ओर आज दीख पड़ता है वह कदापि नहीं होता? वरन् जिस प्रकार राम राज्य था उसी प्रकार हमारा देश आज भी उन्नति करता और विश्वगुरु की पदवी पर ही रहता। हम पाश्चत्य मात्र भौतिकता का अंधानुकरण न कर अपने देश की सभ्यता व संस्कृति की गौरव गरिमा को और ऊँचा उठाते। क्या जिस प्रकार इन पाखंडियों ने, पेटार्थी पोपों ने श्री कृष्ण के चरित्र को उछाला है उसी प्रकार आपके सुपुत्र के चरित्र को कोई उछाले तो आप चुप रहेंगे? कहते हैं गृहस्थ में रहते हुए श्री कृष्ण जैसा ब्रह्मचारी संसार में अभी तक दूसरा नहीं हुआ, उन्होंने विवाह को व्यभिचार का अड्डा न बनाकर रूकमणी के साथ तपस्या की थी, 12 वर्ष तक दोनों ने वेदादि का अध्ययन और कड़ी साधना के पश्चात् एक बार पुत्र प्राप्ति की शुभेच्छा से सहवास किया था तत्पश्चात् आजीवन ब्रह्मचारी रहें दोनों। क्या आज है कि पंडे में इतना दम? ये तो केवल ब्रह्मचारी और योगी को व्याभिचारी व भोगी बना सकते हैं मात्र अपनी विलासिता के लिए। मैं पाठकों से प्रश्न करती हूँ, उन माताओं, बहनों व भाईयों से प्रश्न करती हूँ कि आजकल के पंडितों द्वारा मंदिरों में जिस किस्म के कृष्ण का बखान किया जाता है उस किस्म के लड़के से क्या वे अपनी बेटी का विवाह कर सकते हैं? मैं तो ऐसा कदापि नहीं कर सकती तो सोचिए जरा विचार करिए आप क्या कर रहे हैं? अपने बुद्धि के पट्ठे खोलिए और आज ही अपने घर में से बांसुरी वाले और राधा-कृष्ण के साथ वाले चित्रों और मूर्तियों को तोड़-फोड़कर बाहर फेंक दें जैसा कि महर्षि दयानन्द के समय में हुआ और महाभारत में बताए गए असली सुदर्शन चक्रधारी, राष्ट्रवादी और योगीराज श्री कृष्ण के उस चित्र को

www.thearyasamaj.org

लगाएं जिसमें स्वयं अर्जुन का सारथी बनकर राष्ट्रविरोधी और पापी शासकों को परस्त किया था।

महाभारत के पश्चात् वेद विद्या की क्षीणता के कारण, गुरुकुल आश्रम भी कम होते गए। आश्रम व वर्ण व्यवस्था विकृत हो गई। वर्ण व्यवस्था प्राचीन काल में कर्म पर आधारित थी अब जन्म पर आधारित हो गई वेदों को ना पढ़ने वाले भी स्वयं को चतुर्वेदी, द्विवेदी आदि-आदि ब्राह्मण कहलाने लगे और वेदों का पठन-पाठन छूट जाने से लोग वेद ज्ञान से शून्य होते चले गए और अब तो आलम ये है कि न संस्कारों का ज्ञान रहा, न संस्कृत भाषा का। प्राचीन समय में तो हमारी सामान्य बोलचाल की भाषा ही संस्कृत हुआ करती थी। संस्कृत का ज्ञान ना होने से उनके मनमाने अर्थों को मानना पड़ा। अज्ञानतावश हम अंधश्रद्धा, तंत्र-मंत्र, जादू-टोना, भूत-प्रेत आदि के जाल में फंस कर दुखी रहने लगे। हमारी आर्थिक स्थिति जर्जर होती गयी और ये पाखण्डी ''कमाएगी दुनिया खाएंगे हम'' की सोच रखते हुए लोगों की मानसिक कमजोरी (अभिशाप और वरदान के चक्कर में फंसे हुए) का लाभ उठाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार कर आज मीडिया तक पहुँच गए और समस्त देश को ही नहीं विदेशों में भी रहने वाले हमारे भाई-बहनों को राम कृष्ण द्वारा अपनाई गई जीवन शैली से विमुख कर रहे हैं। ये अपने को श्री कृष्ण का, श्री राम का भक्त कहने लगे। क्या इन पाखण्डियों को गुरु शब्द का वास्तविक अर्थ पता है? 'गुरु' का वास्तविक अर्थ होता है सद्ज्ञान की ओर प्रेरित करने वाला अर्थात सत्य से हमें परिचित कराने वाला लेकिन इनके किस्से कहानी तो भगवान राम और कृष्ण के चरित्र एवं महात्मा शिव के चरित्र का जो ये झूठा दर्शन कराते हैं वहीं समाप्त हो जाते हैं। मेरा यह मानना है यदि आपको अपनी बुद्धि की कसौटी पर खरी लगे तो धारण कर लेना। ये पाखण्डी पोप और पंडे व गुरु कहते हैं कि श्री कृष्ण और राम एवं महात्मा शिव, हनुमान, विष्णु, ब्रह्मा, महेश आदि ये ईश्वर के अवतार हैं, भगवान हैं। भगवान तो मैं भी मान लेती हूँ लेकिन सृष्टि करने वाले व्यक्तियों को भगवान की संज्ञा दी जाती थी लेकिन इन्हें केवल इन्हें ही ईश्वर का अवतार कह तो ऐसा कहना गलत होगा क्योंकि अवतार कहते हैं 'अवतरण' को जो हम सभी का संसार में हुआ है और भूमि, गगन, वायु, अग्नि, नीर इन पांचो तत्वों से हमारा शरीर बना है इन भगवानों का भी इन्हीं तत्वों से बना है और ईश्वर ने हम सभी को किसी ना किसी उद्देश्य से ही संसार में भेजा है। अच्छा मुझे एक बात बताओं कि क्या ईश्वर कण-कण में नहीं समाया है सारी सृष्टि में उसका वास है तो फिर हम केवल मूर्ति पूजा क्यों करें मन्दिर में ही क्यों जाए, चढ़ावा चढ़ाए हमें तो अपने घर में पड़ी हुई प्रत्येक वस्तु की पूजा अर्चना करनी चाहिए यहां तक कि चप्पल जूते आदि की भी उसमें भी तो ईश्वर है। टायलट इत्यादि की सीट, ब्रश झाडू आदि की उनमें भी तो ईश्वर है क्योंकि कण-कण में है तो उनमें भी तो है फिर मन्दिर ही क्यों, वहां भी चढ़ावा चढ़ा सकते हैं आखिर तो मन्दिर में भी हम अपनी मानसिक गन्दगी का पश्चाताप मूर्तियों रूपी भगवान के समक्ष करते है यहां तो शारीरिक गन्दगी भी साफ हो रही है क्यों नहीं कर सकते बताओ जरा, क्या फर्क पड़ता है भला एक पंथ दो काज हो जाएंगे। शरीर की तो गन्दगी साफ हो रही हैं, मन की भी कर लेंगे। अच्छा हम कहते है ना कि बच्चे तो भगवान का रूप होते है तो क्या हम बच्चों को भगवान मानकर उनकी पूजा करते है? क्या उनको भगवान मानकर उन्हें शिक्षा-दीक्षा देना बंद कर देते हैं? नहीं। बस यहीं तो समझना है भगवान तो कण में बसा है चाहे जड़ हो या चेतन लेकिन उसकी प्राप्ति मन्दिर में नहीं होगी। वह हमें किसी पत्थर जूते चप्पल या वस्तु में नहीं मिलेगा वहीं मिलेगा जहां हम भी हैं और हम कहां रहते हैं, हमने कभी जानने का प्रयास ही नहीं किया। हम का रूपी स्थान में आत्मा और परमात्मा रूपी दो पक्षी एक वृक्ष के फलों को भोग रहा, दूसरा देख रहा है, तो कहां मिलेगा वहां जहा हम है। हमारा मन तो सदा बहिर्मुखी होता है क्योंकि अंर्तसाधना तो कभी की नहीं, केवल बाहरी दिखावे में रहें, मन्दिरों में स्थापित मूर्ति को ही भगवान या ईश्वर समझकर साधना करते रहे। याद रखना हमारी (आत्मा) और परमात्मा के बीच केवल ज्ञान की दूरी है, स्थान की नहीं। हम पाखण्डियों के बहकावे में आकर नाना (काशी, हरिद्वार, बद्रीनाथ, काबा आदि) स्थानों में जाकर भगवान को ढूंढते है सो गलत है। लेकिन यदि देश अथवा स्थान

www.thearyasamaj.org

की दूरी होती तो हम परमात्मा को सर्वत्र व्यापक नहीं कह सकते थे क्योंकि परमात्मा तो बद्रीनाथ में भी है। यहां हमारे अन्दर भी तो स्थान या देश की तो दूरी नहीं है और न ही काल की दूरी है क्योंकि मंदिर रात को बंद हो जाते है, ताले लग जाते है मन्दिरों के, तो क्या हमें रात में भगवान से प्रार्थना करनी हो, भगवान के दर्शन करने हो तो क्या हम मन्दिर में ताले खुलवाते है? नहीं हम आँखे बंद करके अपने मन-मन में प्रार्थना करते है सुबह तक ताले खुलने का इंतजार नहीं करते क्योंकि असलियत अर्थात सच्चाई हमें भी पता है कि भगवान हमारे भीतर ही है हम उसे कभी भी किसी भी पल प्रार्थना, उपासना कर सकते है। अब केवल और केवल ज्ञान की दूरी हमारे बीच रूकावट है ज्ञान की दूरी तभी दूर हो सकती है जब हम अपने अंदर छिपे अज्ञान को मिटा देंगे। अज्ञान कहते है असत्य विद्या को और जो सत्य विद्या है अर्थात् जो वस्तु जैसी हो उसको वैसा ही मानना और कहना सत्य है, वहीं सद्ज्ञान है। वही सत्यज्ञान हमें धारण करने में सदैव उद्यत रहना चाहिए और असत्य विद्या को छोड़ने में भी सदैव तत्पर रहना चाहिए। यही महर्षि स्वामी दयानन्द का मन्तव्य है कि आप जो पौराणिकता के पाखण्ड के जाल में फंसे है उसे त्यागकर सच्चे ईश्वर को जाने और फिर माने, अंधानुकरण न करें। महर्षि दयानन्द सरस्वती उच्च ब्राह्मण कुल में जन्में थे उन्हें क्या पड़ी थी कि किसी को सत्य बताए, वे भी अन्य पाखण्डियों पण्डो की भाँति खूब पेट भरते और विवाह कर गृहस्थी बनते, पाँच-सात बच्चे पैदा कर उनके लिए धन वैभव जोड़ लेते लेकिन नहीं उन्होंने अपने जीवन में सत्य की खोज की, सच्चे ईश्वर को जाना और हमें सत्य सनातन वेद ज्ञान की ओर लौटने के लिए प्रेरित किया जो सत्य को ग्रहण कर लेता है फिर उसके समक्ष कितनी भी बड़ी विपत्तियाँ आ जाए बड़े से बड़े दु:ख को सहजता से झेल जाता है उफ तक नहीं करता। तो आईए इस अपने अंदर पन रहें अंधविश्वा की जड़ो को उखाड़ने का प्रयास करे जब तक आप निम्न बातों पर विचार नहीं करोगे तब तक आपका अंधविश्वास नहीं टूटेगा जड़े गहरी होती जाएंगी, आप कैसे अनेक पौराणिक लोग जो पण्डितों और गुरुओं के बहकावे में है वे कहते है मूर्ति पूजा के प्रति हमारी श्रद्धा है एक कहावत भी है 'मानो तो देव नहीं तो पत्थर' लेकिन जो जैसा है उसको वैसा ही मानना बुद्धिमानों का काम है तो पत्थर को पत्थर ही मानना चाहिए देव नहीं। क्या श्रद्धा से अथवा मानने से भगवान मिलते है, क्या? जिसमें श्रद्धा कर लो वही भगवान है? ऐसा विचार करना हमारी भूल है तो विचार कीजिए निम्न बातों पर:-

क्या तेजाब को जल मान लेने से तेजाब जल बन जायेगा? क्या बोबर को खीर समझने की श्रद्धा करे तो गोबर खीर बन जाएगा? क्या कलम में बंदूक की श्रद्धा करे तो कलम बंदूक बन जाएगी? क्या बजरी को चीनी समझने की श्रद्धा करे तो बजरी चीनी बन जाएगी? क्या मदिरा अर्थत शराब में दूध की श्रद्धा करे तो शराब दूध बन जाएगा? शेर को गीदड़ समझकर उसके सामने जाओ, क्या शेर गीदड़ बन जाएगा और छोड़ देगा? यदि हम बल्ब को अज्ञानता वश या अपनी आस्था या श्रद्धा मानकर सूर्य समझने लगे तो क्या वह सूरज बन जाएगा? ऐसा कभी नहीं हो सकता। क्या कागज के फूलों से कभी सुंगध आती है? क्या बिल्ली नकली चूहे पर झपटती है? यदि मांस खाना ही श्रद्धा है तो अपने बच्चे का मांस खाएंगे आप? यदि बल चढ़ाना ही आपकी श्रद्धा है तो क्या अपने किसी प्रियजन की बली चढ़ाना पसंद करेंगे? सृष्टि कभी मानव के हाथों से बन नहीं सकती, यदि बन सकती तो किसी को भी अंधी, लंगड़ी या मृत संतान नहीं होती। शराबी या मांसाहारी अपनी भावना अर्थात् श्रद्धा व आस्था के कारण ही तो मांस खाता या शराब पीता है, तो क्या उसकी यह भावना एवं आस्था उचित एवं अनुकरणीय है? उज्जैन के काल भैरव मन्दिर में सर्वदा चढ़ावे के रूप में शराब की बोतले अर्पित की जाती है। कहीं-कहीं तो मांस भी अर्पित किया जाता है क्या ये ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा है? अपनी आस्था व श्रद्धा के कारण अनेक बाँझ स्त्रियाँ पाखण्डियों पर अंधविश्वास कर दूसरों के बच्चों की बलि कर देती है क्या ये उनकी आस्था, उनका अंधविश्वास सही है?

क्या भारत आज जिस दौरे से गुजर रहा है उसका एक बहुत बड़ा कारण हमारी अन्धश्रद्धा, हमारी गलत आस्था व भावना नहीं है? सोचिए जरा। केवल और केवल एक अकेली मूर्ति पूजा में अपनी श्रद्धा का परिणाम देखिए। वेदों में स्पष्ट है "न तस्य प्रतिमा

www.thearyasamaj.org

अस्ति'' अर्थात् उस ईश्वर की कोई प्रतिमा या मूर्ति ही नहीं है। पहले यज्ञशालाएं होती थी। लगभग 2600 वर्ष पहले मूर्ति पूजा का आरम्भ हुआ, मन्दिर बने, उनमें यज्ञवेदियों के स्थान पर सोना, चाँदी, कांस्य व अन्य धातुओं की मूर्तियों की स्थापना की गई। मन्दिरों में चढ़ावे के स्वरूप हीरे, मोती, रत्न, माणिक्य, पन्ना, पुखराज आदि आने लगे। कालान्तर में जब विदेशियों को पता चला तो उन्होंने आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिए । लोगों का रक्त बहाया। स्त्रियों की अस्मिता लूटी गई। मोहम्मद बिन कासिम, सुबुक्तगीन, गजनबी, तैमूरलंग, गौरी, बाबर आदि ने यहाँ लगभग 6600, 700 वर्षो तक खून की नदिया बहाई, लाखों मन्दिरों, महलों को ध्वस्त किया। गुरुकुलों, आश्रमों व विद्यालयों को नष्ट किया। यह सब उन मन्दिरों में अथाह धन सम्पति के कारण हुआ। आज भी इसका उदाहरण पदमनाथ का मन्दिर जो दक्षिण भारत में विद्यमान है, 1 लाख करोड़ रूपये के लगभग उसमें हीरे मोती स्वर्ण आदि है। ऐसे ही जब सोमनाथ का मन्दिर तोड़ा गया तो सन् 1001 में उसमें सैतालिस सौ करोड़ रूपये के हीरे, जवाहरात व आभूषण मिले थे। आज उनका मूल्य क्या होगा। ये सब मूर्तिपूजा में श्रद्धा के कारण ही तो है।

इसी अविद्या के कारण सिन्ध के राजा की हार हुई। वह अत्यन्त साहसी एवं बलवान योद्धा था उसने हार नहीं मानी बस मोहम्मद बिन कासिम और मन्दिर के पुजारी की मिलिभगत से अन्धविश्वास का आश्रय लेकर ही हार हुई। मन्दिर के पुजारी ने दाहिर की सेना में भ्रान्ति फैला रखी थी कि जिस दिन मंदिर का ध्वज झुक जाएगा उस दिन सेना हार जाएगी। अन्यथा सेना को हराना टेढ़ी खीर है। कासिम को जब यह बात पता चली तो वह ब्राह्मण का वेश धारण कर सिंध के उस मन्दिर पर आ गया और पुजारी से युद्ध के समय झंडा झुका देने और जीतने पर आधा राज्य पारितोषिक स्वरूप देने को कहा। इस छल के कारण सिंध के राजा दाहिर की पराजय हुई थी। झंडा झुका देने से सेना का मनोबल अंधविश्वास के कारण टूट गया। दाहिर अकेला पड़ गया यह सब अवैदिक ज्ञान व अन्धविश्वास के कारण ही तो हुआ।

आखिर अपने हृदय से पूछे क्या मूर्ति पूजा परमात्मा को पाने के लिए की जाती है? सत्य तो यह है कि परमात्मा को साकार वस्तुओं के माध्यम से नहीं पाया जा सकता। मूर्तियों से तो भगवान का बनाया हुआ मनुष्य, स्त्री, पुत्र, मित्र आदि का साकार रूप अच्छा जिनको देखकर मन स्थिर किया जा सकता है पर ऐसा नहीं होता। हर रोज हमारा मन इन साकारों को देखकर भी चंचल होता है, कलुषित होता है तो स्पष्ट है मन को, बुद्धि को, हृदय को साकार की आवश्यकता नहीं जरा सोचिए जब मन्दिर के भगवान को साकार रूप दे ही दिया तो पूजा अर्चना के समय आंखे बन्द करके क्यों बैठते है? टकटकी लगाकर निरन्तर उसे देखते क्यों नहीं? प्रिय पाठकों! मूर्ति पूजन करने वाला मन्दिर में स्थित मूर्ति से मन्दिर में थोड़ा भय खाएगा अन्यत्र स्थान नहीं क्योंकि उसके लिए तो भगवान मन्दिर में ही रहता है परिणाम स्वरूप एकान्त पाकर खूब कुकर्म करेगा क्योंकि वह जानता है कि परमात्मा तो मन्दिर में है मुझे देख नहीं रहा। मूर्ति पूजक तो नास्तिक है, आस्तिक तो परमात्मा को कण-कण में मानने वाला है। अत: वह पाप कर्मों से स्वयं को बचा लेता है। अत: पाठकों से निवेदन है मेरी बात को अन्यथा ना लेकर अपने भीतर के ईश्वर को जानो, तथा बाहरी दिखावा बन्द करो, मेरा मूर्ति पूजा के खण्डन का प्रयोजन किसी भी प्रकार से किसी के मन को दुखना नहीं अपितु सत्य ज्ञान की ओर प्रेरित करना है यदि उपरोक्त लेख के माध्यम से आपके अंदर सच्चे ईश्वर के प्रति थोड़ी सी भी सच्ची श्रद्धा उत्पन्न होकर आप इस अन्धकूप से निकलने का प्रयास करेगें तो मैं अपनी इस लेखनी को सार्थक समझूंगी।

-चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला, गांव-शाहबाद मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61, मो. 9910334655

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195

www.thearyasamaj.org

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

अन्न एवं अन्नार्थ प्राप्त दान

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ पंजाबी बाग, दिल्ली	11000/-
मल्होत्रा परिवार डी-26 कीर्तिनगर, दिल्ली	7000/-
श्री सुदेश अरोड़ा, राजेन्द्र नगर, दिल्ली	5100/-
श्रीमती दयावती धर्मपत्नी श्री चरण सिंह जी, बहादुरगढ़	5000/-
श्री रवि जी अन्जनि प्रोपर्टीज, बहादुरगढ़	2100/-
श्रीमती शकुन्तला देवी धर्मपत्नी श्री मा. हजारीलाल जी गुप्ता अग्रवाल कॉलोनी, बहादुरगढ़, साधारण भोजनार्थ	2100/-
श्री सुभाष ठुकराल विकासपुरी, दिल्ली	2000/-
श्री अशोक जी जून नूना माजरा बहादुरगढ़	1111/-
श्री आशीष सुपुत्र माता शान्ता अध्यापिका, बहादुरगढ़	1100/-
श्री लाला प्रकाशवीर जी आर्य झज्जर	1100/-
श्रीमती कृष्णा देवी (माता-संजय दिनेश) टीकरी दिल्ली	1100/-
श्री आदित्य आनन्द सु. श्री अनिलवीर आनन्द, कीर्ति नगर,दि.	1100/-
श्री विजय पोपली कीर्तिनगर, दिल्ली	1100/-
लीखा कैमिकल्स प्रा. लि. एम.आई.ई., बहादुरगढ़	1100/-
श्री राजेश जी आर्य सुपुत्र श्रीमती सुदेश कालड़ा, प. विहार	1100/-
श्री कर्मवीर जी राठी, चेयरमैन, नगर परिषद् बहादुरगढ़	1100/-
श्री सतीश जी छिकारा चेयरमैन जिला परिषद् झज्जर	1000/-
श्री जय कृष्ण जी भट्ट, द्वारका दिल्ली	1000/-
श्री एन.डी. शर्मा, रोहिणी, दिल्ली	1000/-
श्री चेतनी देवी सचदेवा जी सचदेवा परिवार डेरावाल नगर,दि.	1000/-
श्री रामदुलारी बंसल वैदिक वृद्धाश्रम, बहादुरगढ़	1000/-
श्री बी.के. कुमार नागपाल जी कीर्ति नगर, दिल्ली	1000/-
श्री जगवीर जी सैनी विवेकानन्द नगर, बहादुरगढ़	505/-
श्री लोकेश चन्द जी पंचाल नेहरूपार्क, बहादुरगढ़	501/-
श्री जिलेसिंह अहलावत (तेजनाथ बाबा जी) आर्यनगर, बहा.	501/-
मा. करतार सिंह जी आर्य टीकरी कलां, दिल्ली	501/-
श्री वीरेन्द्र जी नरूला, झज्जर	500/-
श्री राजवीर जी आर्य, धर्मविहार, बहादुरगढ़	500/-
श्री शशि भूषण गर्ग, बहादुरगढ़	500/-
श्री रमेश जी दराल सुपुत्र श्री मामचन्द दराल टीकरी	500/-
श्री शीलचन्द जी, बहादुरगढ़	500/-
श्री संजय सिंह जी बडौत	500/-
श्री शिवकुमार जी, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री मोनू नेहरूपार्क, बहादुरगढ़	500/-
श्री नारायण सिंह जो एडवोकेट, जसौरखेड़ी, झज्जर	500/-
श्री जतिन बुद्धिराजा कीर्तिनगर, दिल्ली	500/-

विविध वस्तुएं

श्री विश्नाथ जी अग्रवाल सुपुत्र श्री रामप्रताप जी अग्रवाल अग्रवाल कॉलोनी, बहादुरगढ़	1 रजाई 1 गद्दा
लीखा कैमिकल्स प्रा. लि., एम.आई.ई., बहादुरगढ़	1 बोरी आटा
दीपाली गारमेन्टस रेलवे रोड, बहादुरगढ़	1 टीन देशी घी, 50 किलो चीनी, 35 किलो दाल
श्री मोक्ष दलाल जी बहादुरगढ़	1 क्विंटल गेहूं
दीपांशु राठी बहादुरगढ़	2 कट्टे गेहँ, 100 रूपये
श्री अनुराग जाखड़ शास्त्री नगर, बहादुरगढ़	10 किलो आटा, 50/- रूपये
श्री जतिन बुद्धिराजा कीर्तिनगर, दिल्ली	12 मीटर कपड़ा
श्री उमेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़	1 क्विंटल चावल
श्री बिहारी लाल राजेन्द्र प्रसाद अनाजमण्डी बहादुरगढ़	50 किलो चावल
श्रीमती इन्द्रावती देवी 7 विश्वा बहादुरगढ़	38 जोड़ी जुते जुर्राबे
श्रीमती विद्यावन्ति दुआ बहादुरगढ़	1 बोरी चुरी
मा. इन्द्रजीत लाल सैक्टर-6, बहादुरगढ़	5 कम्बल
पूरी ऑयल मील बहादुरगढ़	1 टीन रिफाइन्ड तेल
शनि मन्दिर टीकरी कलां दिल्ली	1 टीन सरसो तेल

गौशाला हेतु प्राप्त दान

सतगुरु मार्बल बराही रोड, बहादुरगढ़ चारार्थ	500/-
श्री उमेद सिंह डरोलिया काठमण्डी, बहादुरगढ़	50 किलो दलिया
श्री नरेश गर्ग जी नांगलोई दिल्ली चारार्थ	2000/-
श्री वीरेन्द्र आर्य दौलतबाद, गुड़गांव	1100/-

भोजनार्थ प्राप्त दान

श्री विनोद प्रमोद कुमार फर्नीचर नजफगढ़, दि.	1 समय का विशिष्ट भोजन
कबीर आश्रम लाईनपार, बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन, विद्यार्थियों को साबुन वितरण

श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.) द्वारा एकत्रित दान राशि

श्रीमती गंधार कला जी, पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्री आर.सी. झा विकासपुरी, नई दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार नई दिल्ली-63	250/-
श्री एस.के. मल्होत्रा जी गुलाब बाग, उत्तम नगर, दिल्ली	250/-
डॉ. पुष्पलता वर्मा, विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
श्री के.के. छाबड़ा जी, विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
श्री जगदीश जी एफ-315, विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
श्रीमती प्रवीण मेहन्दीरत्ता, विकासपुरी, दिल्ली	150/-
श्री सेठी परिवार, विकासपुरी, दिल्ली	100/-
श्री एच.पी. खण्डेवाल विकासपुरी, दिल्ली	100/-

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 दिसम्बर 2013 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

www.thearyasamaj.org

स्वामी धर्ममुनि जी के 78वें जन्मोत्सव पर सम्मानित करते हुए

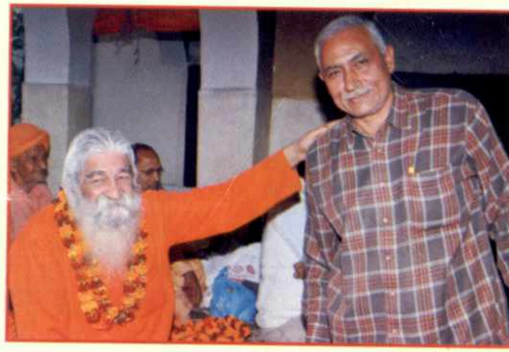

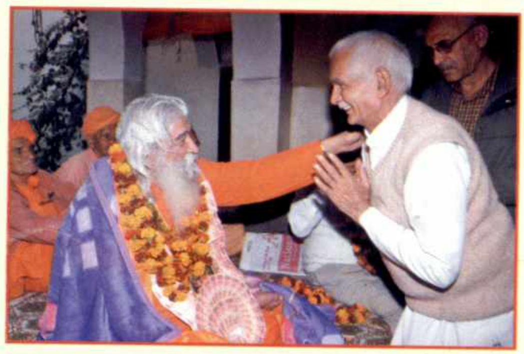
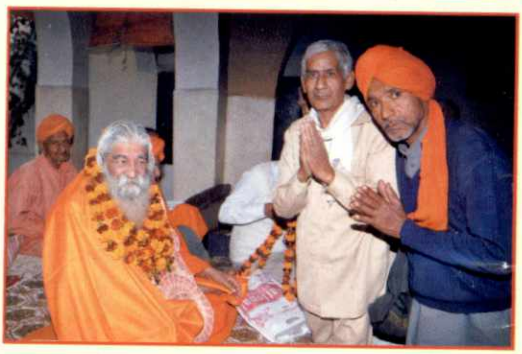

www.thearyasamaj.org

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक

दिसम्बर 2013

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2012-14

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम

बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

स्वामी धर्ममुनि जी के 78वें जन्मोत्सव की सुन्दर झलकियां